युक्रांद

लिनो एवं कार्कट आवरण—कामता सागर

मनुष्य गुलाम है, क्योंकि वह अकेला होने से भयभीत है ।।
इसीलिए उसे चाहिए भीड़, सम्प्रदाय, संगठन ।।
संगठन का आधार भय है ।।
और भयभीत-चित्त सत्य को कैसे जान सकता है ?
सत्य के लिए चाहिए अभय ।।
और अभय आता है साधना से, संगठन से नहीं ।।
इसीलिए तो धर्म, संप्रदाय, समाज–सभी सत्य के मार्ग में अवरोध हैं ।।

युक्रांद

आचार्य श्री रजनीश जी की
सृजनात्मक जीवन दृष्टि का
पाक्षिक संकलन-पत्र

मानसेवी सम्पादक
अजित कुमार

सह-सम्पादक
आलोक पांडे

वर्ष १ : अंक ६
१ सितम्बर १९६९

मूल्य
६० न० पै० एक प्रति
वार्षिक १२ रु०

मुखपृष्ठ लेआउट
कामता सागर

दो शब्द–

आचार्य श्री के एक-एक शब्द किसी तेज धार की तरह आते हैं और हमारे भीतर तक हमें चीरते चले जाते हैं, और हमें अनुभव होता है कि हम कहीं नये हुए, हमारे भीतर कहीं कुछ जी उठा..... कहीं कुछ सक्रिय हो उठा..... कहीं कोई उत्साह..... कहीं कुछ आस्था..... कहीं कोई लहर..... ।

उनके भीतर मनुष्य मात्र के लिए कितनी करुणा है, कितना प्रेम है, जिसने उन्हें बोलते हुए सुना है, वह अपरिचित नहीं होगा । उनके प्रकाशित भाषणों को पढ़कर भी हम काफी कुछ उस धार की तेजी का और अपने में एक स्फूर्ति व जीवन्तता का अनुभव करेंगे । इसी सहज विश्वास के साथ यह छठवाँ अंक आपके हाथ में है । आपका प्रेम, सहयोग, सुझाव सदैव अपेक्षित, आमंत्रित..... ।

सप्रेम–

युक्रांद परिवार ।

जीवन • और • चुनौतियाँ • .....?

"मैं एक घर में ठहरा था। उस घर में आग लग गई। घर के लोग चिल्लाने लगे। आग लग गई थी तो चिल्लाये और पड़ौस के लोगों को जगाया। तो मैंने उनसे कहा कि पहले यह तय करलो कि किस भाषा में चिल्लाओगे। हिन्दी में कि अंग्रेजी में। क्योंकि अब तक एक राष्ट्रभाषा निश्चित नहीं हुई है। किस भाषा में चिल्लाओगे। जब तक यह ही तय नहीं, तब तक चुपचाप बैठो। मकान जलने दो। टुच्चे दो कौड़ी के मसले हम देश के सामने उठाकर पूरे मुल्क के प्राणों को बिखेर रहे हैं। मुल्क के सामने कोई जीवन्त समस्या, कोई बड़ा मसला नहीं है। पता होना चाहिये आपको कि जगत में केवल वे ही कौमें और वे ही राज्य और वे ही मुल्क कुछ कर पाते हैं जिनके पास कोई जीवन्त मसला होता है, कोई बड़ी समस्या होती है। बड़ी समस्याओं के पास बड़ी आत्मायें पैदा होती हैं। बीस साल से हम चिल्ला रहे है। बीस साल पहले जब आजादी नहीं मिली थी तब हमारे मुल्क ने कितने बड़े लोग पैदा किये। वे लोग किसी बड़े मसले के इर्द-गिर्द पैदा हुए थे। बीस साल से आपमें कोई बड़ा मसला पैदा नहीं हुआ। बड़े लोग कैसे पैदा हो सकते हैं। आजादी की बड़ी समस्या थी, बड़ा प्रश्न था, जीवन मरण का प्रश्न था। उसके आसपास बड़ी आत्मायें जगीं और पैदा हुई। जीवन तो चुनौतियों (Challenge) से पैदा होता है। बीस साल से कौनसा चैलेंज है आपके सामने ? यही कि मैसूर का एक जिला महाराष्ट्र में रहे कि मैसूर में। बेवकूफियों की भी सीमायें होती हैं, लेकिन हम उनको भी पार कर गये हैं।

जीवन के लिये चाहिये बड़े जीवन्त और विराट प्रश्न। और स्मरण रहे हम जितनी बड़ी समस्या चुनते हैं, जितनी बड़ी चुनौती, उतनी ही हमारे भीतर सोई हुई आत्मा जागृत होती है और विकसित होती है।"

काम और प्रेम : एक विश्लेषण

आज तक मनुष्य की सारी संस्कृतियों ने सेक्स का, काम का, वासना का विरोध किया है। इस विरोध ने, इस निषेध ने मनुष्य के भीतर प्रेम के जन्म की सम्भावना नष्ट कर दी। क्योंकि सचाई यह है कि प्रेम की सारी यात्रा का प्राथमिक बिन्दु काम है, सेक्स है। प्रेम की यात्रा का जन्म, गंगोत्री – जहां से गंगा पैदा होगी—प्रेम की, वह सेक्स है, वह काम है और उसके सब दुश्मन हैं। सारी संस्कृतियां, सारे धर्म, सारे गुरू और सारे महात्माओं ने तो गंगोत्री पर ही चोट कर दी। वहीं रोक दिया। पाप है काम, अधम है काम, जहर है काम। और हमने सोचा भी नहीं कि काम की ऊर्जा ही, सेक्स की एनर्जी ही अन्ततः प्रेम में परिवर्तित होती और रूपांतरित होती है। प्रेम का जो विकास है, वह काम की शक्ति का ही ट्रांसफारमेशन है। वह उसी का रूपांतरण है। एक कोयला पड़ा हो और आप को ख्याल भी नहीं आयेगा कि कोयल ही रूपांतरित होकर हीरा बन जाता है। हीरे और कोयले में बुनियादी रूप से कोई भी फर्क नहीं है। हीरे में भी वे ही तत्त्व हैं जो कोयले में हैं और कोयला हजारों वर्ष की प्रक्रिया से गुजर कर हीरा बन जाता है। लेकिन कोयले की कोई कीमत नहीं है, उसे कोई घर में रखता भी है तो ऐसी जगह जहां कि दिखाई न पड़े और हीरे को लोग छातियों पर लटकाकर घूमते हैं कि वह दिखाई पड़े। हीरा और कोयला एक ही हैं, लेकिन कहीं दिखाई पड़ता है कि इन दोनों के बीच इतना अन्तर सम्बन्ध है। दोनों के बीच जो है वह एक ही है। एक ही शक्ति की यात्रा के वे दो बिन्दु हैं। कोयले की शक्ति ही हीरा बनती है और अगर आप कोयले के दुश्मन हो गये, जो कि हो जाना बिल्कुल आसन है क्योंकि कोयले में कालिख के सिवाय और कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता है, तो हीरे के पैदा होने की सम्भावना भी समाप्त हो गई, क्योंकि कोयला ही हीरा बन सकता था। सेक्स की शक्ति ही, काम की शक्ति ही प्रेम बनती है, लेकिन उसके विरोध में सारे दुश्मन हैं उसके। अच्छे आदमी उसके दुश्मन हैं। और उसके विरोध में उन्होंने प्रेम के अंकुर भी नहीं फूटने दिये और जमीन से, प्रारंभ से, पहली सीढ़ी से ही नष्ट कर दिया प्रेम के भवन को। काम की शत्रुता ने प्रेम के जन्म की सम्भावना ही छीन ली। फिर वह कोयला हीरा नहीं बन पाता है, क्योंकि उसके बनने के लिये जो स्वीकृति चाहिये जो उसका विकास चाहिये, जो उसको रूपांतरित करने की प्रक्रिया चाहिये, उसका सवाल ही नहीं उठता। जिसके हम दुश्मन हो गये, जिसके हम शत्रु हो गये, जिससे हमारी द्वन्द की स्थिति बन गई हो और जिससे हम निरन्तर लड़ने लगे हों उसे कैसे रूपांतरित किया जा सकता है? अपनी ही शक्ति से आदमी को लड़ा दिया गया है। सेक्स की शक्ति से आदमी को लड़ा दिया गया है और शिक्षायें दी जाती हैं कि द्वंद छोड़ना चाहिये, कानफ्लिक्ट्स छोड़ना चाहिये और सारी शिक्षायें बुनियाद में सिखा रहीं है कि लड़ो। मन जहर है तो मन से लड़ो, जहर से तो लड़ना ही पड़ेगा। सेक्स पाप है तो उससे लड़ो और ऊपर से कहा जा रहा है कि द्वंद छोड़ो। इन शिक्षाओं के आधार पर मनुष्य द्वंद से भर रहा है। वे ही शिक्षायें दूसरी तरफ कह रही हैं कि द्वंद छोड़ो। एक तरफ आदमी को पागल बनाओ और दूसरी तरफ पागलखाने खोलो कि उनका इलाज करना है। एक तरफ कीटाणु फैलाओ बीमारियों के और फिर अस्पताल खोलो कि बीमारियों का इलाज यहां किया जाता है।

एक क्रांतिकारी प्रवचन:

भारत और युवा

(बड़ौदा जीवन जागृति केंद्र के सौजन्य से)

युवकों के लिए कुछ भी बोलने के पहले यह ठीक से समझ लेना जरूरी है कि युवक का अर्थ क्या है। युवक का कोई भी संबंध शरीर की अवस्था से नहीं है। उम्र से युवा होने का कोई भी संबंध नहीं है। बूढ़े भी युवा हो सकते हैं और युवा भी बूढ़े हो सकते हैं। लेकिन ऐसा कभी कभी ही होता है कि बूढ़े युवा हों, ऐसा अक्सर होता है कि युवा बूढ़े होते हैं। और इस देश में तो युवक पैदा होते हैं, यह भी संदिग्ध बात है।

युवा होने का अर्थ है चित्त की एक दशा, चित्त की एक जीवंत दशा, लिविंग स्टेट आफ माइंड। बूढ़े होने का अर्थ है चित्त की मरी हुई दशा। इस देश में युवक पैदा ही शायद नहीं होते हैं जब ऐसा मैं कहता हूं तो उसका अर्थ यही है कि हमारा चित्त जीवंत नहीं है। वह जो जीवन का उत्साह, वह जो जीवन का आनंद और संगीत हमारे हृदय की वीणा पर होना चाहिए, वह नहीं है। आंखों में, प्राणों में, रोम रोम में वह जो जीवन को जीने की उद्दाम लालसा होनी चाहिए वह हममें नहीं है। जीवन को जियें, इससे पहले ही जीवन से उदास हो जाते हैं। जीवन को जानें, इससे पहले ही हम जीवन को जानने की जिज्ञासा की हत्या कर देते हैं।

मैंने सुना है स्वर्ग के एक रेस्तरां में एक दिन सुबह एक छोटी सी घटना घट गई। उस रेस्तरां में तीन अद्भुत लोग एक टेबिल के आसपास बैठे हुए थे---गौतम बुद्ध, कंफ्युसस, और लाओत्से। वे तीनों स्वर्ग के एक रेस्तरां में बैठकर गपशप करते थे। फिर एक अप्सरा जीवन का रस लेकर आयी और उस अप्सरा ने कहा: जीवन का रस पियेंगे ?

बुद्ध ने सुनते ही आंख बन्द कर ली और कहा: जीवन व्यर्थ है, असार है, कोई सार नहीं।

कंफ्युसस ने आधी आंख बन्द कर ली और आधी खुली रखी। वह गोल्डन मीन को मानता था, हमेशा मध्य मार्ग। उसने थोड़ी सी खुली आंखों से देखा और कहा : एक घूंट लेकर चखूंगा। अगर आगे भी पीने योग्य लगा तो विचार करूंगा। उसने थोड़ा सा जीवन रस लेकर चखा और कहा, न पीने योग्य है, न छोड़ने योग्य, कोई सार भी नहीं, कोई असार भी नहीं। उसने मध्य की बात कही। लाओत्से ने पूरी की पूरी सुराही हाथ में ले ली जीवन रस की और कुछ कहे बिना पूरा पी गया और तब नाचने लगा और कहने लगा, आश्चर्य कि गौतम तुमने बिना पिये ही इन्कार कर दिया और आश्चर्य कि कंफ्युसस, तुमने थोड़ा सा चखा लेकिन कुछ चीजें ऐसी होती हैं पूरी ही जानी जायें तो ही जानी जा सकती हैं। थोड़ा चखने से उनका कोई भी पता नहीं चलता। अगर किसी कविता का एक छोटा सा टुकड़ा किसी को दिया जाय दो पंक्तियों का तो उससे पूरी कविता के संबंध में कुछ भी पता नहीं चलता। एक उपन्यास का पन्ना फाड़ कर किसी को दे दिया जाय तो उससे पूरे उपन्यास के संबंध में कोई भी पता नहीं चलता है। एक संगीत वीणा पर कोई बजाता हो, उसका एक स्वर किसी को मिल जाय तो उससे उसको वीणाकार ने क्या बजाया था, इसका कुछ भी पता नहीं चलता। एक बड़े चित्र का छोटा सा टुकड़ा फाड़कर किसी को दे दिया जाय तो उस बड़े चित्र में क्या है, उस छोटे से टुकड़े से कुछ भी पता नहीं चल सकता। कुछ चीजें हैं जिनके थोड़े स्वाद से कुछ पता नहीं चलता, जिन्हें उनकी समग्रता में, उनकी होलनेस में, उनकी टोटलिटी में, उनकी समग्रता में ही पीना पड़ता है तभी पता चलता है। लाओत्से कहने लगा : नाच उठा

हूं मैं । अद्भुत था जीवन का रस और अगर जीवन का रस भी अद्भुत नहीं है तो अद्भुत क्या होगा ? जिनके लिए जीवन का रस ही व्यर्थ है उनके लिए सार्थकता कहां मिलेगी ? फिर वे खोजें और खोजें। वे जितना खोजेंगे उतना ही खोते चले जायेंगे क्योंकि जीवन ही है एक सारभूत, जीवन ही है एक रस, जीवन ही है एक सत्य। उसमें ही छिपा है सारा सौन्दर्य, सारा आनंद, सारा संगीत।

लेकिन भारत में युवक उस जीवन के उद्दाम वेग से आपूरित नहीं मालूम पड़ते और न ऐसा लगता है उनके जीवन में, उनके प्राणों में उन शिखरों को छूने की कोई आकांक्षा है जो जीवन के शिखर हैं। न ऐसा लगता है कि उन अज्ञात शिखरों को खोजने के लिए प्राणों में कोई उद्दाम पीड़ा है, उन शिखरों को जो जीवन के शिखर हैं, न जीवन के अंधेरे को, न जीवन के प्रकाश को, न जीवन की गहराई को, न जीवन की ऊंचाई को, न जीवन की हार को, न जीवन की जीत को, कुछ भी जानने की जो उद्दाम वेग, जो गति, जो ऊर्जा होनी चाहिए वह युवक के पास नहीं है इसलिए युवक भारत में हैं ऐसा कहना केवल औपचारिकता है, फार्मिलिटी । भारत में युवक नहीं हैं, भारत हजारों साल से बूढ़ा देश है। उसमें बूढ़े पैदा होते हैं, बूढ़े ही जीते हैं और बूढ़े ही मरते हैं। न बच्चे पैदा होते हैं, न जवान पैदा होते हैं। हम इतने बूढ़े हो गये हैं कि हमारी जड़ें जीवन के रस को नहीं खींचतीं और न हमारी शाखाएं जीवन के आकाश में फैलती हैं और न हमारी शाखाओं में जीवन के पक्षी बसेरा करते हैं और न हमारी शाखाओं पर जीवन का सूरज उगता है और न जीवन का चांद चांदनी बरसाता है। सिर्फ धूल जमती जाती है, जड़ें सूखती जाती हैं, पत्ते कुम्हलाते जाते हैं। फूल पैदा नहीं होते, फल आते नहीं हैं। वृक्ष है, न उसमें पत्ते हैं, न फूल हैं। सूखी शाखाएं खड़ी हैं। ऐसा अभागा हो गया है देश।

जब युवकों के संबंध में कुछ बोलना हो तो पहली बात यही ध्यान देनी जरूरी है। युवक कोई शारीरिक अवस्था है तब तो हमारे पास भी युवक हैं। युवक अगर कोई मानसिक दशा है स्टेटस आफ माइंड है तो युवक हमारे पास नहीं हैं। अगर युवक हमारे पास होते तो देश में इतनी गंदगी, इतनी सड़ांध, इतना सड़ा हुआ समाज जीवित रह सकता था ? कभी की उन्होंने आग लगा दी होती। अगर युवक हमारे पास होते, एक हजार साल तक हम गुलाम रहते ? कभी की गुलामी को उन्होंने उखाड़ फेंका होता। अगर युवक हमारे पास होते तो हम हजारों हजारों साल तक दरिद्रता और दीनता और दुख में बिताते। हमने कभी की दरिद्रता मिटा दी होती या खुद मिट गये होते। लेकिन नहीं, युवक शायद नहीं हैं। युवक हमारे पास होते तो इतना पाखंड इतना अंधविश्वास पलता इस देश में ? युवक बरदाश्त करते ? एक एक करोड़ रुपये यज्ञों में जलाने देते ? युवक अगर मुल्क के पास होते। और अब मैं सुनता हूं कि और भी करोड़ों रुपये को जलाने का इन्तजाम करने के लिए साधु संन्यासी लालायित हैं और युवक ही जाकर चंदा इकट्ठा करेंगे और वालंटियर बनकर उस यज्ञ को करवायेंगे जहां देश की संपत्ति लेगी निपट गंवारी में। अगर युवक मुल्क में होते तो ऐसे लोगों को क्रिमिनल्स कहकर पकड़कर अदालतों में खड़ा किया होता जो मुल्क की संपत्ति को इस भांति बर्बाद करते हैं। एक करोड़ रुपये की संपत्ति जलाने में जो आदमी जितना अपराधी हो जाता है उससे भी ज्यादा अपराधी एक करोड़ रुपये यज्ञ में जलाने से होता है क्योंकि एक करोड़ रुपये की संपत्ति को जलाने वाला थोड़ा बहुत अपराध भी अनुभव करेगा। यज्ञ में जलाने वाले पायस क्रिमिनल हैं, पवित्र अपराधी हैं। उसको अपराध भी नहीं मालूम पड़ता है। लेकिन युवक मुल्क में नहीं हैं इसलिए किसी भी तरह की मूढ़ता चलती है, इसलिए मुल्क में किसी भी तरह का अंधकार चलता है। युवकों के होने का सबूत नहीं मिलता देश को देखकर। क्या चल रहा है देश में ? युवक किसी भी चीज पर राजी हो जाते हैं। वह युवक कैसा जिसके भीतर विद्रोह न हो, रिवल्युशन न हो, युवक होने का मतलब क्या हुआ उसके भीतर ? जो गलती के सामने झुक जाता हो उसको युवक कैसे कहें। जो टूट जाता हो लेकिन झुकता न हो, जो मिट जाता हो लेकिन गलत को बरदाश्त न करता हो,

वैसी स्प्रिट, वैसी चेतना का नाम ही युवक होना है। टु बी यंग, युवा होने का एक ही मतलब है वैसी आत्मा विद्रोही की जो झुकना नहीं जानती, टूटना जानती है, जो बदलना चाहती है, जो जिन्दगी को नयी दिशाओं में, नये आयामों में ले जाना चाहते हैं, जो जिन्दगी को परिवर्तन करना चाहता है। क्रांति की वह उद्दाम आकांक्षा ही युवा होने का लक्षण है। कहां है क्रांति की उद्दाम आकांक्षा ?

एक विचारक भारत आया था काउंट केसर ले। लौटकर उसने एक किताब लिखी है। उस किताब को मैं पढ़ता था तो मुझे बहुत हैरानी होने लगी। उसने एक वाक्य लिखा है जो मेरी समझ के बाहर हो गया क्योंकि वाक्य कुछ ऐसा मालूम पड़ता था जो कि कंटेडेक्टरी है, विरोधाभास है। फिर मैंने सोचा कि छापेखाने की कोई

"जो टूट जाता हो लेकिन झुकता न हो, जो मिट जाता हो लेकिन गलत को बरदाश्त न करता हो, वैसी स्प्रिट, वैसी चेतना का नाम ही युवक होना है।"

भूल हो गयी होगी। तो ख्याल आया कि किताब जर्मनी में छपी है। जर्मनी में छापेखाने की तो भूलें होती नहीं। वह तो हमारे ही देश में होती हैं। यहां तो किताब छपती है, उसके ऊपर पाँच छः पन्ने की भूल सुधार छपा रहता है और वह पाँच छः पन्ने को गौर से पढ़िये तो उसमें भी भूलें मिल जायेंगी। वह किताब जर्मनी में छपी है, भूल नहीं हो सकती। फिर मैंने गौर से पढ़ा, फिर बार बार सोचा, फिर ख्याल आया भूल नहीं की है, उस आदमी ने मजाक की है। उसने लिखा है कि मैं हिन्दुस्तान गया। मैं एक नतीजा लेकर वापस आया हूं —'इंडिया इज ए रिच कंट्री व्हेअर पुअर पीपुल लिव।' हिन्दुस्तान एक अमीर देश है जहां गरीब आदमी रहते हैं। मैं बहुत हैरान हुआ, यह कैसी बात है। अगर देश अमीर है तो गरीब आदमी क्यों रहते हैं वहां और देश अगर अमीर है तो वहां के लोग गरीब क्यों हैं। लेकिन वह मजाक कर रहा है। वह यह कह रहा है कि हिन्दुस्तान के पास जवानी नहीं है जो कि देश के छिपे हुए धन को प्रगट कर दे और देश को धनवान बना दे। देश में धन छिपा हुआ है लेकिन देश बूढ़ा है। बूढ़ा कुछ कर नहीं सकता। धन खजाने में पड़ा रह जाता है बूढ़ा भूखा मरता रहता है। धन जमीन में दबा रह जाता है, बूढ़ा भूखा मरता रहता है। देश बूढ़ा है इसलिए गरीब है। देश जवान हो तो गरीब होने का कोई कारण नहीं। देश के पास क्या कमी है। लेकिन अगर हमें कुछ सूझता है तो एक ही बात सूझती है कि जाओ दुनिया में और भीख मांगो। जाओ अमरीका जाओ रूस, हाथ फैलाओ सारी दुनिया में। भिखारी होने में हमें शर्म भी नहीं आती। हम जवान हैं ? रास्ते पर एक जवान, स्वस्थ आदमी भीख मांगता हो तो हम उससे कहते हैं कि जवान होकर भीख मांगते हो ? और हम कभी नहीं सोचते कि हमारा पूरा मुल्क सारी दुनिया में भीख मांग रहा है तो हमें जवान होने का हक रह जाता है ? सड़क पर भीख मांगते आदमी को कोई भी कह देता है कि जवान होकर भीख मांगते हो। हम जानते हैं कि जवान होकर भीख मांगना लज्जा से भरी हुई बात है, अपमानजनक है। जवान को पैदा करना चाहिए। हां, बूढ़ा भीख मांगता हो तो हम क्षमा कर सकते हैं, अब उससे आशा नहीं पैदा करने की है।

सारी दुनिया में हम भीख मांग रहे हैं। १९४७ के बाद अगर हमने कोई महान कार्य किया है तो वह यही कि हमने सारी दुनिया में भीख मांगने में सफलता पायी है, शर्म भी नहीं आती हमें, दुनिया क्या सोचती होगी कि कितना बूढ़ा देश है, कुछ कर नहीं सकता, सिर्फ भीख मांग सकता है। लेकिन उन्हें पता नहीं है कि हम पहले से ही पैदा करने की बजाय भीख मांगने को आदर देते रहे हैं। हिन्दुस्तान में जो भीख मांगता है वह आदृत है उससे, जो पैदा करता है। ब्राह्मण हजार साल तक देश में आदृत रहे सिर्फ इसलिए कि वे पैदा नहीं करते और भीख मांगते हैं और हिन्दुस्तान ने बड़े बड़े भिखारी पैदा किये हैं। महापुरुष बुद्ध से लेकर विनोबा तक भीख मांगने वाले

महापुरुष। अगर सारा मुल्क भीख मांगने लगा हो तो हर्ज क्या है। हम सब महापुरुष हो गये हैं, महापुरुषों का देश है, सारा देश महापुरुष हो गया है। हम सारी दुनिया में भीख मांग रहे हैं। भिक्षा वृत्ति बड़ी धार्मिक वृत्ति है। पैदा करने में हिंसा भी होती है, पैदा करने में इन्हें श्रम भी उठाना पड़ता है और फिर हम पैदा क्यों करें? जब भगवान ने हमें पैदा कर दिया है तो भगवान इंतजाम करे। जिसने चोंच दिया है वह चूंग देगा। हम अपनी चोंच को हिलाते फिरेंगे सारी दुनिया में कि चूंग दो, क्योंकि हमें पैदा किया है और जो हमें भीख देंगे हम गालियां देंगे कि तुम भौतिकवादी हो, यू मेटीरियालिस्ट, तुम भौतिकवाद में मरे जा रहे हो, हम आध्यात्मिक लोग हैं। हम इतने आत्ध्यात्मिक हैं कि हम पैदा भी नहीं करते। हम खाते हैं, खाना आध्यात्मिक काम है, पैदा करना भौतिक काम है। भोगना आध्यात्मिक काम है, श्रम? श्रम करना आध्यात्मिक लोग कभी नहीं करते, हीन आत्माएं श्रम करती हैं, महात्मा भोग करते हैं। पूरा देश महात्मा हो गया है। १९६२ में चीन में अकाल की हालत थी। ब्रिटेन के कुछ भले मानुषों ने एक बड़े जहाज पर बहुत सा सामान, बहुत सा भोजन, कपड़े, दवाइयां भरकर वहां भेजे। हम अगर होते तो चंदन तिलक लगाकर फूल मालाएं पहनकर उस जहाज की पूजा करते लेकिन चीन ने उसको वापस भेज दिया और जहाज पर बड़े बड़े अक्षरों में लिख दिया, हम मर जाना पसन्द करेंगे लेकिन भीख स्वीकार नहीं कर सकते।

शक होता है कि यहां कुछ जवान लोग होंगे। जवान ही यह हिम्मत कर सकता है कि भूखा मरते देश में और आया हो भोजन बाहर से और लिख दे, जहाज पर कि हम भूखों मर सकते हैं लेकिन भीख नहीं मांग सकते। भूखा मरना इतना बुरा नहीं है, भीख मांगना बहुत बुरा है। लेकिन जवानी हो तो बुरा लगे, भीतर जवान खून हो तो चोट लगे, अपमान हो। हमारा अपमान नहीं होता। हम तो शांति से अपमान को झेलते चले जाते हैं। हम बड़े तटस्थ हैं, अपमान को झेलने में कुछ भी हो जाय हम आँख बन्द करके झेल लेते हैं। यह तो संतोष का, शांति का लक्षण है कि जो भी हो उसको झेलते रहो, बैठे रहो चुपचाप और झेलते रहो। हजारों साल से देश झेल झेल कर मर गया तो कैसे हम स्वीकार कर लें कि देश के पास जवान आदमी हैं, युवक हैं। युवक देश के पास नहीं हैं और इसलिए पहला काम तथाकथित युवकों के लिए जो उम्र से युवक दिखायी पड़ते हैं वह यह है कि वह मानसिक यौवन को पैदा करने की देश में चेष्टा करें। वे शरीर के यौवन को मानकर तृप्त न हो जायें, आत्मिक यौवन, स्प्रीच्युअल यंगनेस पैदा करने का एक आंदोलन सारे देश में चलना चाहिए। हम इससे राजी नहीं होंगे कि एक आदमी शकल सूरत से जवान दिखायी पड़ता है तो हम उसे जवान मान लें। हम इसकी फिक्र करेंगे कि हिन्दुस्तान के पास जवान आत्मा हो।

स्वामी राम भारत के बाहर यात्रा में पहली दफा गये थे। जिस जहाज पर वे यात्रा कर रहे थे उस पर एक बूढ़ा जर्मन था जिसकी उम्र कोई ९० साल होगी। उसके सारे बाल सफेद हो चुके थे, उसकी आंखों में ९० साल की स्मृति ने गहराइयां भर दी थीं, उसके चेहरे पर झुर्रियां थीं लंबे अनुभवों की लेकिन वह जहाज के डैस्क पर बैठकर चीनी भाषा सीख रहा था। चीनी भाषा सीखना साधारण मामला नहीं है क्योंकि चीनी भाषा के पास कोई वर्णमाला नहीं है, कोई अ ब स नहीं होता चीनी भाषा के पास। वह पिक्टोरियल लांग्वेज है, उसके पास तो चित्र हैं। साधारण आदमी को साधारण ज्ञान के लिए कम से कम पांच हजार चित्रों का ज्ञान चाहिए और विशेष ज्ञान के लिए तो एक लाख चित्रों का ज्ञान हो तब कोई आदमी चीनी भाषा का पंडित हो सकता है। दस पन्द्रह वर्ष का श्रम मांगती है चीनी भाषा। ९० साल का बूढ़ा सुबह से बैठकर सांझ तक चीनी भाषा सीख रहा है! रामतीर्थ बेचैन हो गये। यह आदमी पागल है, ९० साल की उम्र में चीनी भाषा सीखने बैठा है, कब सीख पायेगा? आशा नहीं कि मरने के पहले सीख जाओगे और अगर कोई दूर की कल्पना भी करे कि यह आदमी जी जायेगा दस पन्द्रह साल, सौ साल पार कर जायेगा, जो कि भारतीय कभी कल्पना नहीं कर सकता

कि सौ कैसे पार कर जायेगा। ३५ साल पार करना तो मुश्किल हो जाता है. सौ कैसे पार करोगे ? लेकिन समझ लें भूल चूक भगवान की कि यह सौ साल से पार निकल जायेगा तो भी फायदा क्या है ? जिस भाषा को सीखने में १५ वर्ष खर्च हों उसका उपयोग भी तो दस पच्चीस वर्ष करने का मौका मिलना चाहिए। सीख के भी फायदा क्या होगा। दो तीन दिन देखकर रामतीर्थ की बेचैनी बढ़ गयी । वह बूढ़ा तो आंख उठाकर ही नहीं देखता था कि कहां क्या हो रहा है, वह तो अपने सीखने में लगा था। तीसरे दिन उन्होंने जाकर उसे हिलाया और कहा कि महाशय, क्षमा करिये, मैं यह पूछना चाहता हूं कि आप यह क्या कर रहे हैं ? इस उम्र में चीनी भाषा सीखने बैठे हैं ? कब सीख पाइएगा और सीख भी लिया तो इसका उपयोग कब करियेगा ? आपकी उम्र क्या है ? तो उस बूढ़े ने कहा, उम्र ? मैं काम में इतना व्यस्त रहा कि उम्र का हिसाब रखने का कुछ मौका नहीं मिला। उम्र अपना हिसाब रखती होगी, हमें फुर्सत कहां कि उम्र का हिसाब रखें और फायदा क्या है उम्र का हिसाब रखने में ? मौत जब आनी है जब आनी है। तुम चाहे कितने हिसाब रखो, कि कितने हो गये, उससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। मुझे फुर्सत नहीं मिली उम्र का हिसाब रखने की, लेकिन जरूर नब्बे तो पार कर गया हूं। रामतीर्थ ने कहा कि फिर यह सीखकर क्या फायदा ? बूढ़े हो गये हो। अब कब सीख पाओगे ? उस बूढ़े आदमी ने क्या कहा ? उसने कहा, मरने का मुझे ख्याल नहीं आता जब तक मैं सीख रहा हूं। जब सीखना खत्म हो जायगा तो सोचूंगा मरने की बात। अभी तो सीखने में जिन्दगी लगा रहा हूं, अभी तो मैं बच्चा हूं क्योंकि मैं सीख रहा हूं। बच्चा सीखता है, लेकिन उस बूढ़े ने कहा कि चूंकि मैं सीख रहा हूं इसलिए बच्चा हूं। यह आध्यात्मिक जगत में परिवर्तन हो गया। उसने कहा, चूंकि मैं सीख रहा हूं और अभी सीख नहीं पाया, अभी तो जिन्दगी की पाठ-शाला में प्रवेश किया है। अभी तो बच्चा हूं, अभी तो मरने का कैसे सोचें। जब सब सीख लूंगा तो सोचूंगा मरने की बात। फिर उस बूढ़े ने कहा, मौत हर रोज सामने खड़ी है। जिस दिन पैदा हुआ था उस दिन उतनी ही सामने खड़ी थी जितनी अभी खड़ी है। अगर मौत से डर जाता तो उसी दिन सीखना बन्द कर देता। सीखने का क्या फायदा था ? मौत आ सकती कल, लेकिन ९० साल का अनुभव मेरा कहता है कि मैं ९० साल मौत को जीता हूं। रोज मौत का डर रहा है कि कल आ जायेगी लेकिन आयी नहीं। ९० साल तक मौत नहीं आयी तो कल भी कैसे आ पायेगी। ९० साल का अनुभव कहता है कि अब तक नहीं आयी तो कल भी कैसे आ पायेगी, अनुभव को मानता हूं। ९० साल तक डर फिजूल था। वह बूढ़ा पूछने लगा रामतीर्थ से कि आपकी उम्र क्या है? रामतीर्थ तो घबरा ही आये थे उसकी बात सुनकर। उनकी उम्र केवल ३० वर्ष थी। उस बूढ़े ने कहा, तुम्हें देखकर, तुम्हारे भय को देखकर मैं कह सकता हूं भारत बूढ़ा क्यों हो गया। तीस साल का आदमी मौत की सोच रहा है, मर गया, मौत की सोचता कोई तब है जब मर

"भारत को एक युवा आध्यात्म चाहिये, युवा आध्यात्म। बूढ़ा आध्यात्म हमारे पास बहुत है। हमारे पास ऐसा आध्यात्म है, जो बूढ़ा करने की कीमिया है, केमिस्ट्री है।"

जाता है। तीस साल का आदमी सोचता है कि सीखने से क्या फायदा, मौत करीब आ रही है। यह आदमी जवान नहीं रहा, उस बूढ़े ने कहा, मैं समझ गया कि भारत बूढ़ा क्यों हो गया है, इन्हीं गलत धारणाओं के कारण।

भारत को एक युवा आध्यात्म चाहिए, युवा आध्यात्म। बूढ़ा आध्यात्म हमारे पास बहुत है। हमारे पास ऐसा आध्यात्म है जो बूढ़ा करने की कीमिया है, केमिस्ट्री है। हमारे पास ऐसी आध्यात्मिक तरकीबें हैं कि किसी भी जवान के आसपास उन तरकीबों का उपयोग करो वह फौरन बूढ़ा हो जायगा। हमने बूढ़े होने का राज खोज लिया है, सीक्रेट खोज लिया है। बूढ़े होने के राज क्या हैं ? बूढ़ा होने के राज हैं जीवन पर ध्यान

मत रखो, मौत पर ध्यान रखो। यह पहला सीक्रेट है। जिन्दगी पर ध्यान मत देना, ध्यान रखना मौत पर। जिन्दगी की खोज मत करना, खोज करना मोक्ष की। इस पृथ्वी की फिक्र मत करना, फिक्र करना परलोक की, स्वर्ग की। यह बूढ़ा होने का पहला सीक्रेट है। जिन जिन को बूढ़ा होना हो, इसको नोट कर लें। कभी जिन्दगी की तरफ मत देखना। अगर फूल खिल रहा हो तो तुम खिलते फूल की तरफ मत देखना, तुम बैठकर सोचना कि जल्दी ही यह मुर्झा जायेगा। यह तरकीब है। अगर एक गुलाब के पौधे के पास खड़े हों तो फूलों की गिनती मत करना, कांटों की गिनती करना कि सब असार है, कांटे ही कांटे पैदा होते हैं। एक फूल खिलता है, मुश्किल से हजार कांटों में। हजार कांटों की गिनती कर लेना। उससे जिन्दगी असार सिद्ध करने में बड़ी आसानी मिलेगी। अगर दिन और रात को देखो तो ऐसा कभी मत देखना कि दो दिन के बीच एक रात है। हमेशा ऐसा देखना कि दो रातों के बीच में एक छोटा सा दिन है। बूढ़े होने की तरकीब कह रहा हूं। जिन्दगी में जहां जहां अंधेरे हों उसको मैग्नीफाई करना। बड़ा दिखाने वाला कांच अपने पास रखना। जहां अंधेरा दिखायी पड़े फौरन मैग्नीफाई ग्लास लगा देना, बड़ा भारी अंधेरा देखना है और जहां रोशनी दिखायी पड़े वहां छोटा कर देने वाला ग्लास अपने पास रखना जो जल्दी से रोशनी को छोटा कर दे। जहां फूल दिखायी पड़ें, गिनती मत करना, फौरन सोच लेना, फूल ? क्या रखा है फूल में ? क्षण भर को है, अभी खिला है, अभी मुर्झा जायेगा। कांटा, कांटा स्थायी है, शाश्वत है, सनातन है। न कभी खिलता है, न कभी मुर्झाता है। हमेशा है। इन बातों पर ध्यान देने से आदमी बहुत जल्दी बूढ़ा हो जाता है।

मैंने सुना है कि न्यूयार्क की सौंवी मंजिल से एक आदमी गिर रहा था। सौंवी मंजिल से वह आदमी गिर रहा था। जब वह पचासवीं मंजिल के पास से गुजर रहा था खिड़की से तो एक आदमी ने चिल्ला कर उससे पूछा कि दोस्त क्या हाल है। उसने कहा कि अभी तक तो सब ठीक है। यह आदमी गड़बड़ आदमी है। यह आदमी जवान होने का ढंग जानता है, लेकिन यह ठीक नहीं है। उस आदमी ने कहा, अभी तक सब ठीक है, अभी जमीन तक पहुंचे नहीं हैं, जब पहुंचेंगे तब देखेंगे। अभी पचासवीं खिड़की तक सब ठीक चल रहा है। ओ के।

यह आदमी जवान होने की तरकीब जानता है लेकिन हमको ऐसी तरकीबें कभी नहीं सीखनी चाहिए। हमें तो बूढ़े होने के रास्ते पर चलना चाहिए। बूढ़ा होने का रास्ता, कभी जिन्दगी में जो सुन्दर हो उसकी तरफ ध्यान मत देना, जो असुन्दर हो उसको खोज-बीन करना और कोई आदमी आकर आपको कहे कि फलाँ आदमी बहुत बड़ा संगीतज्ञ है, कितना अद्‌भुत बाँसुरी बजाता है तो फौरन उसको कहना कि वह बांसुरी क्या खाकर बजायेगा। वह आदमी चोर है, बेईमान है, बांसुरी कैसे बजा सकता है। आप धोखे में पड़ गये होंगे, वह आदमी पक्का बेईमान है, वह बाँसुरी नहीं बजा सकता। यह बूढ़े होने की तरकीब है। अगर जवान आदमी उस गांव में जायेगा और कोई उससे कहेगा, उस आदमी को जानते हो ? वह बड़ा चोर बेईमान है, तो वह जवान आदमी कहेगा कि यह कैसे हो सकता है कि वह चोर है, बेईमान है। मैंने उसे बड़ी सुन्दर बांसुरी बजाते देखा है। इतना अद्‌भुत बांसुरी जो बजाता है वह चोर नहीं हो सकता।

बूढ़े के जिन्दगी को देखने का ढंग है दुखद को देखना, अंधेरे को देखना मौत को देखना, कांटे को देखना। हिन्दुस्तान हजारों साल से दुखद को देख रहा है। जन्म भी दुख है, जीवन भी दुख है, मरण भी दुख है, प्रियजन का बिछुड़ना दुख है, अप्रिय जन का मिलना दुख है, सब दुख है, मां के पेट का दुख झेलो, फिर जन्म का दुख झेलो, फिर बड़े होने का दुख झेलें, फिर जिन्दगी में गृहस्थी के चक्कर झेलों, फिर बुढ़ापे की बीमारियां झेलो, फिर मौत झेलो, फिर जलने की आग में अंतिम पीड़ा झेलो। ऐसा जीवन एक दुख की लंबी कथा है। बूढ़ा होना हो तो इसका स्मरण करना चाहिए। बूढ़ा होना है तो बगीचे में नहीं जाना चाहिए, हमेशा मरघट पर बैठकर ध्यान करना चाहिए, जहां आदमी जलाये जाते हों।

सुन्दर से बचना चाहिए, असुन्दर को देखना च हिए, विकृत को देखना चाहिए, स्वस्थ को छोड़ना चाहिए। सुख मिले तो कहना चाहिए क्षणभंगुर है. अभी है, अभी खत्म हो जायेगा। दुख मिले तो छाती से लगाकर बैठ जाना चाहिए और सदा आखें रखनी चाहिए जीवन के उस पार, कभी इस जीवन पर नहीं। इस जीवन को समझना चाहिए एक वेटिंग रूम है, जैसे बड़ौदा के स्टेशन पर एक वेटिंग रूम हो, उसमें बैठते हैं आप थोड़ी देर। वहीं छिलके फेंक रहे हैं, वहीं पान थूंक रहे हैं क्योंकि हमको क्या करना है, अभी थोड़ी देर में हमारी ट्रेन आयेगी और फिर हम चले जायेंगे। तुमसे पहले जो बैठा था वह भी वेटिंग रूम के साथ यही सद्व्यवहार कर रहा था, तुम भी यही सद्व्यवहार करो, तुम्हारे बाद वाला भी वही करेगा। वेटिंग रूम गंदगी

"अगर जवान होना है तो जिन्दगी को देखना, मौत को लात मार देना। मौत से क्या प्रयोजन है। जब तक जिन्दा हैं, तब तक जिन्दा हैं। तब तक मौत नहीं है।"

का एक घर बन जायेगा क्योंकि किसी को क्या मतलब है। हमको तो थोड़ी देर रुकना है तो आंख बंद करके राम राम जप के गुजार देंगे। अभी ट्रेन आती है, चली जायेगी। जिन्दगी के साथ जिन लोगों की आंखें मौत के पार लगी हैं उनका व्यवहार वेटिंग रूम का व्यवहार है। वे कहते हैं, क्षण भर की तो जिन्दगी है, अभी जाना है, क्या करना है हमें। हिन्दुस्तान के संत महात्मा यही समझा रहे हैं लोगों को—क्षणभंगुर है जिन्दगी, इसके मायामोह में मत पड़ना। ध्यान वहां रखना आगे, मौत के बाद। इस छाया में सारा देश बूढ़ा हो गया है।

अगर जवान होना है तो जिन्दगी को देखना, मौत को लात मार देना। मौत से क्या प्रयोजन है। जब तक जिन्दा हैं, तब तक जिन्दा हैं। तब तक मौत नहीं है। सुकरात मर रहा था। ठीक मरते वक्त जब उसके लिए बाहर जहर घोला जा रहा है, वह जहर घोलने वाला धीरे धीरे घोल रहा है। वह सोचता है, जितनी देर सुकरात और जिन्दा रह ले, अच्छा है। जितनी देर लग जाय। वक्त हो गया है। जहर आना चाहिए। सुकरात उठकर बाहर जाता है और पूछता है मित्र, कितनी देर और? उस आदमी ने कहा, तुम पागल हो गये हो सुकरात, मैं देर लगा रहा हूं इसलिए कि थोड़ी देर तुम और रह लो, थोड़ी देर सांस तुम्हारे भीतर और आ जाय थोड़ी देर सूरज की रोशनी और देख लो, थोड़ी देर खिलते फूलों को, आकाश को, मित्रों की आंखों को और झांक लो, बस थोड़ी देर और। नदी भी समुद्र में गिरने के पहले पीछे लौटकर देखती है। तुम थोड़ी देर लौटकर देख लो। मैं देर लगाता हूं, तुम जल्दी क्यों कर रहे हो? तुम इतनी उतावली क्यों किये जा रहे हो। सुकरात ने कहा, मैं जल्दी क्यों किये जा रहा हूं? मेरे प्राण तड़फे जा रहे मौत को जानने को, नयी चीज को जानने की मेरी हमेशा से इच्छा रही है। मौत बहुत बड़ी नयी चीज रही है, सोचता हूं, देखूं क्या चीज है। यह आदमी जवान है, यह आदमी बूढ़ा नहीं है। मौत को भी देखने के लिए इसकी आतुरता है। मित्र कहने लगा कि थोड़ी देर और जी लो। सुकरात ने कहा, जब तक मैं जिन्दा हूं, मैं यह देखना चाहता हूं कि जहर पीने से मरता हूं कि जिन्दा हो रहता हूं। लोगों ने कहा कि अगर मर गये, तो उसने कहा कि यदि मर ही गये तो फिक्र ही खत्म हो गयी। चिन्ता का कोई कारण न रहा और जब तक जिन्दा हूं जिन्दा हूं, जब मर गये तो मर ही गये, चिन्ता की कोई बात नहीं, खत्म हो गयी बात। लेकिन जब तक मैं जिन्दा हूं जिन्दा हूं, तब तक मैं मरा हुआ नहीं हूं और मैं पहले से क्यों मर जाऊं? मित्र सब मरे हुए बैठे हैं पास, रो रहे हैं, जहर की घबराहट आ रही है। वह सुकरात प्रसन्न है, वह कहता है जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक मैं जिन्दा हूं, जब तक जिन्दगी को जानूं और सोचता हूं कि शायद मौत भी जिन्दगी में एक घटना है, होगी तो उसको भी जानूं।

सुकरात को बूढ़ा नहीं किया जा सकता। मौत

सामने खड़ी हो जाय तो भी वह बूढ़ा नहीं होता और हम ? जिन्दगी सामने खड़ी रहती है और बूढ़े हो जाते हैं। यह रुख भारत में युवा मस्तिष्क को पैदा नहीं होने देता है। जीवन का दुखद, जीवन का विषादपूर्ण चित्र फाड़कर फेंक दो। आग लगा दो उसमें और जो भी जिन्दगी के दुख और जिन्दगी के विषाद को बढ़ा चढ़ाकर बतलाते हैं, जिन्दगी के दुश्मन हैं, देश में युवा को पैदा होने देने में दुश्मन हैं। वह युवक को पैदा होने के पहले बूढ़ा बना देते हैं।

अभी मैं कुछ दिन पहले भावनगर था। एक छोटी सी लड़की ने, तेरह चौदह साल उम्र थी, उसने मुझे आकर कहा कि मुझे आवागमन से छुटकारे का रास्ता बताइए। तेरह चौदह साल की लड़की कहती है कि मैं आवागमन से कैसे छूटूं, फिर इस मुल्क में कैसे जवानी पैदा होगी। तेरह चौदह साल की लड़की बूढ़ी हो गयी। वह कहती है, मैं मुक्त कैसे होऊं। जीवन से छूटने का विचार करने लगी है। अभी जीवन के द्वार पर थपकी भी नहीं दी, अभी जीवन की खिड़की भी नहीं खुली, अभी जीवन की वीणा भी नहीं बजी, अभी जीवन के फूल भी नहीं खिले। वह द्वार के बाहर ही पूछने लगी, छुटकारा, मुक्ति मोक्ष कैसे मिलेगा। जहर डाल दिया होगा किसी ने उसके दिमाग में, मां-बाप ने, गुरुओं ने, शिक्षकों ने उसको पायजनस बना दिया। उसकी जवानी पैदा नहीं होगी अब। अब वह बूढ़ी ही जियेगी, उसका विवाह भी होगा तो वह एक बूढ़ी औरत का विवाह है, जवान लड़की का नहीं। उसके घर के द्वार पर शहनाइयां बजेंगी तो एक बूढ़ी औरत सुनेगी उन शहनाइयों को, एक जवान लड़की नहीं। उन शहनाइयों से भी मौत की आवाज सुनायी पड़ेगी, जीवन का संगीत नहीं। वह बूढ़ी हो गयी।

पहली बात, अगर बूढ़ा होना है तो मौत पर ध्यान रखना जीवन पर नहीं। और अगर जवान होना है तो मौत को लात मार देना है। वह जब आयेगी तब मुकाबला कर लेंगे। जब तक जीते हैं तब तक पूरी तरह से जियेंगे, उसकी टोटलिटी में जीवन के रस को खोजेंगे, जीवन के आनंद को खोजेंगे।

रवीन्द्रनाथ मर रहे थे। एक बूढ़े मित्र आये और उन्होंने कहा, अब मरते वक्त तो भगवान से प्रार्थना कर लो कि अब दोबारा जीवन को न भेजें। अब आखिरी वक्त प्रार्थना कर लो कि अब आवागमन से छुटकारा हो जाय। अब इस ख्वाब, इस गंदगी के चक्कर में न आना पड़े। रवीन्द्रनाथ ने कहा, क्या कहते हैं आप ? मैं और यह प्रार्थना करूं। मैं तो मन ही मन यह कह रहा हूं कि हे प्रभु, अगर तूने मुझे योग्य पाया हो तो बार बार तेरी पृथ्वी पर भेज देना। बड़ी रंगीन थी, बड़ी सुन्दर थी, ऐसे फूल नहीं देखे, ऐसे चांद, ऐसे तारे, ऐसी आंखें, ऐसा सुन्दर चेहरा। मैं दंग रह गया हूं, मैं आनंद से भर गया हूं। अगर तूने मुझे योग्य पाया हो तो हे परमात्मा, बार बार इस दुनिया में मुझे भेज देना। मैं तो यह प्रार्थना कर रहा हूं, मैं तो डरा हुआ हूं कि कहीं मैं अपात्र न सिद्ध हो जाऊं कि दोबारा न भेजा जाऊं। रवीन्द्रनाथ को बूढ़ा बनाना बहुत मुश्किल है। शरीर बूढ़ा हो जायगा लेकिन इस आदमी के भीतर जो आत्मा है वह जवान है, वह जीवन की मांग कर रही है। रवीन्द्रनाथ ने मरने के कुछ ही घड़ी पहले कुछ कड़ियां लिखवायीं। उनमें दो कड़ियां हैं—"देखा तो मैं नाचने लगा।" क्या प्यारी बात कही है। किसी मित्र ने रवीन्द्र नाथ को कहा कि तुम तो महाकवि हो, तुमने ६ हजार गीत लिखे जो संगीत में बांधे जा सकते हैं। शेले को लोग पश्चिम में कहते हैं महाकवि। उसके तो सिर्फ दो हजार गीत संगीत में बंध सकते हैं, तुम्हारे तो छः हजार गीत। तुमसे बड़ा कोई कवि दुनिया में कभी नहीं हुआ। रवीन्द्रनाथ की आंखों से आंसू बहने लगे। रवीन्द्रनाथ ने कहा, क्या कहते हो मैं तो भगवान से कह रहा हूं कि अभी मैंने गीत गाये कहां थे, अभी तो साज बिठा पाया था और विदा का क्षण आ गया। अभी तो ठोंक पीटकर तंबूरा ठीक किया था सिर्फ, अभी मैंने गीत गाया कहां था। अभी तो मैंने तंबूरे की तैयारी की थी ठोंक पीटकर तैयार हो गया था, साज बैठ गया था। अब मैं गाने की चेष्टा करता और यह तो विदा का क्षण आ गया और मेरे तंबूरे के ठोंकने पीटने से लोगों ने समझ लिया है कि यह महाकवि हो गया है। भगवान से कह रहा हूं कि

संगीत का साज तैयार हो गया और मुझे विदा कर रहे हो ? अब तो मौका आया था कि मैं गीत गाऊं। मरते हुए रवीन्द्रनाथ कहते हैं कि अभी तो मौका आया है कि मैं गीत गाऊं। वह यह कह रहे थे कि अभी तो मौका आया था कि मैं जवान हुआ था। वह यह कह रहे हैं कि अब तो मौका आया था कि तैयारी हो गयी थी और मुझे विदा कर रहे हो। बूढ़ा आदमी यह कह सकता है तो फिर वह आदमी बूढ़ा नहीं है। अगर जवान होना है तो जिन्दगी को उसको सामने से पकड़ लेना पड़ेगा। एक एक क्षण जिन्दगी भागी चली जा रही है, उसे मुट्ठी में पकड़ लेना पड़ेगा, उसे जीने की पूरी चेष्टा करनी पड़ेगी और जी केवल वे ही सकते हैं जो उसमें रस का दर्शन करते हैं और वहां दोनों चीजें हैं जिन्दगी के रास्ते पर,

"जिन्दगी के रास्ते पर कांटे भी हैं और फूल भी। जिन्हें बूढ़ा होना हो वे कांटों की गिनती कर लें। जिन्हें जवान होना हो वे फूलों को गिन लें और मैं कहता हूं कि करोड़-करोड़ कांटे भी फूल की एक पंखड़ी के मुकाबले कम हैं।"

कांटे भी हैं और फूल भी। जिन्हें बूढ़ा होना हो वे कांटों की गिनती कर लें। जिन्हें जवान होना हो वे फूलों को गिन लें और मैं कहता हूं कि करोड़ करोड़ कांटे भी फूल की एक पंखड़ी के मुकाबले कम हैं। एक गुलाब की छोटी सी पंखड़ी इतना बड़ा मिरेकल है, इतना बड़ा चमत्कार है कि करोड़ों कांटें इकट्ठे कर लो उससे क्या सिद्ध होता है। उससे कुछ भी सिद्ध नहीं होता। उससे सिर्फ इतना ही सिद्ध होता है कि बड़ी अद्‌भुत है यह दुनिया। जहां इतने कांटे हैं वहां मखमल जैसा गुलाब का फूल पैदा हो सकता है। उससे सिर्फ इतना सिद्ध होता है और कुछ भी सिद्ध नहीं होता। लेकिन यह देखने की दृष्टि पर निर्भर है कि हम कैसे देखते हैं।

पहली बात, जिन्दगी पर ध्यान चाहिए। मेडीटेशन ओन लाइफ, मौत पर नहीं। तो आदमी जवान से जवान होता चला जाता है। बुढ़ापे के अंतिम क्षण तक मौत के द्वार पर भी खड़ा होकर वैसा आदमी जवान होता है। दूसरी बात, जो आदमी जीवन में सुन्दर को देखता है, जो आदमी जवान है वह आदमी असुन्दर को मिटाने के लिए लड़ता भी है। जवानी फिर देखती नहीं, जवानी लड़ती भी है। जवानी एक्सपेक्टेटर नहीं है, जवानी तमाशबीन नहीं है कि तमाशा देख रहे हैं खड़े होकर। जवानीका मतलब है जंग, तमाशगीरी नहीं। जवानी का मतलब है सृजन, जवानी का मतलब है सम्मिलित होना, ओपटीसिपेशन। दूसरा सूत्र है खड़े होकर रास्ते के किनारे अगर देखते हो जवानी की यात्रा को तुम तमाशबीन हो, तुम जवान नहीं हो, एक निष्क्रिय देखने वाले। निष्क्रिय देखने वाला आदमी जवान नहीं हो सकता। जवान सम्मिलित होता है जीवन में और जिस आदमी को सौंन्दर्य से प्रेम है, जिस आदमी को जीवन के रस और आनंद से प्रेम है, जिस आदमी को जीवन का आल्हाद है वह जीवन को आल्हादित बनाने के लिए श्रम करता है, सुन्दर बनाने के लिए श्रम करता है। वह जीवन की कुरूपता से लड़ता है, वह जीवन को कुरूप करने वालों के खिलाफ विद्रोह करता है। कितनी अग्लीनेस है, कितनी कुरूपता है समाज में और जिन्दगी में। अगर तुम्हें प्रेम है सौंदर्य से तो एक युवक एक सुन्दर लड़की की तस्वीर लेकर बैठ जाय और पूजा करने लगे। एक युवती एक सुन्दर युबक की तस्वीर लेकर बैठ जाय और कविताए करने लगे इतने से जवानी का काम पूरा नहीं हो जाता। सौंदर्य से प्रेम का मतलब है : सौंदर्य को पैदा करो, क्रियेट करो, जिन्दगी को सुन्दर बनाओ। आनंद की उपलब्धि और आनंद की आकांक्षा का अर्थ आनन्द को बिखराओ। फूलों को चाहते हो तो फूलों को पैदा करने की चेष्टा में संलग्न हो जाओ। जैसा तुम चाहते हो जिन्दगी को वैसी जिन्दगी को बनाओ। जवानी मांग करती है कि तुम कुछ करो, खड़े होकर देखते मत रहो।

हिन्दुस्तान की जवानी तमाशबीन है। हम ऐसे रहते हैं खड़े होकर जीवन में जैसे कोई जुलूस जा रहा है वैसे रुके हैं, देख रहे हैं, कुछ भी हो रहा है। शोषण हो रहा है जवान खड़ा हुआ देख रहा है। बेबकूफियां हो

रही हैं जवान खड़ा देख रहा है। बुद्धिहीन लोग देश को नेतृत्व दे रहे हैं जवान खड़ा हुआ देख रहा है। जड़ता धर्मगुरू बनकर बैठी है, जवान खड़ा हुआ देख रहा है। सारे मुल्क के हितों को नष्ट किये जा रहे हैं, जवान खड़ा हुआ देख रहा है। यह कैसी जवानी है? कुरूपता से लड़ना पड़ेगा, असौंदर्य से लड़ना पड़ेगा, शोषण से लड़ना पड़ेगा, जिन्दगी को विकृत करने वाले तत्वों से लड़ना पड़ेगा। जो आदमी जवान होता है वह सागर की लहरों और तूफानों में जीता है। फिर आकाश में उसकी उड़ान होनी शुरू होती है। लेकिन लड़ोगे तुम? व्यक्तिगत लड़ाई ही नहीं है, कोई, सामूहिक लड़ाई की तो बात अलग बात है। कोई फाइट नहीं, और बिना फाइट के बिना लड़ाई के जवानी निखरती नहीं। जवानी सदा लड़ती है और निखरती है, जितना लड़ती है उतना निखरती है। सुन्दर के लिए, सत्य के लिए जवानी जितनी लड़ती है उतनी निखरती है, लेकिन क्या लड़ोगे? तुम्हारे पिता आ जायेंगे, तुम्हारी गर्दन में रस्सी डालकर कहेंगे, इस लड़की से विवाह करो और तुम घोड़े पर बैठ जाओगे। तुम जवान हो? और तुम्हारे बाप जाकर कहेंगे कि दस हजार रुपये लेंगे इस लड़की के पिता से और तुम मजे से मन में गिनती करोगे कि दस हजार में स्कूटर खरीदें कि क्या करें। तुम जवान हो? ऐसी जवानी दो कौड़ी की जवानी है। जिस लड़की को तुमने कभी चाहा नहीं, जिस लड़की को तुमने कभी प्रेम नहीं किया, जिस लड़की को तुमने कभी छुआ नहीं उस लड़की से विवाह करने के लिए तुम पैसे के लिए राजी हो रहे हो, समाज की व्यवस्था के लिए राजी हो रहे हो तो तुम जवान नहीं हो। तुम्हारी जिन्दगी में कभी भी वे फूल नहीं खिलेंगे जो युवा मस्तिष्क जानता है। तुम कभी उस आकाश को नहीं छुओगे जो युवा मस्तिष्क छूता है। तुम हो ही नहीं, तुम एक मिट्टी के लौंदे हो जिसको कहीं भी सरकाया जा रहा हो, कहीं पर भी लिया जा रहा हो। कुछ भी नहीं तुम्हारे मन में संदेह है, न जिज्ञासा है, न संघर्ष है, न पुकार है, न पूछ है, न इन्क्वेरी है कि यह क्या हो रहा है। कुछ भी हो रहा है, हम देख रहे हैं खड़े होकर।

नहीं, ऐसे नहीं जवानी पैदा होती है। इसलिए दूसरा सूत्र तुमसे कहता हूं और वह यह कि जवानी संघर्ष से पैदा होती है। संघर्ष गलत के लिए भी हो सकता है और तब जवानी कुरूप हो जाती है। संघर्ष बुरे के लिए भी हो सकता है, तब जवानी विकृत हो जाती है। संघर्ष अधूरे के लिए भी हो सकता है तब जवानी आत्मघात कर लेती है। लेकिन संघर्ष जब सत्य के लिए, सुन्दर के लिए, श्रेष्ठ के लिए होता है, संघर्ष जब परमात्मा के लिए होता है, संघर्ष जब जीवन के लिए होता है तब जवानी सुन्दर, स्वस्थ, सत्य होती चली जाती है। हम जिसके लिए लड़ते हैं अंततः वही हम हो जाते हैं। लड़ो सुन्दर के लिए और तुम सुन्दर हो जाओगे। लड़ो सत्य के लिए और तुम सत्य हो जाओगे, लड़ो श्रेष्ठ के लिए तुम श्रेष्ठ हो जाओगे। और मत लड़ो तुम, खड़े खड़े सड़ोगे और मर जाओगे और कुछ भी नहीं होओगे। जिन्दगी संघर्ष है और संघर्ष से ही पैदा होती है। जैसा हम संघर्ष करते हैं वैसे ही हो जाते हैं। हिन्दुस्तान में कोई लड़ाई नहीं है, कोई फाइट नहीं है। सब कुछ हो रहा है, अजीब हो रहा है। हम सब जानते हैं, देखते हैं सब हो रहा है और होने दे रहे हैं। अगर हिन्दुस्तान की जवानी खड़ी हो जाय तो हिन्दुस्तान में फिर ये सब नासमझियां नहीं हो सकती हैं जो हो रही हैं। एक आवाज में टूट जायेंगी क्योंकि जवान नहीं है इसलिए कुछ भी हो रहा है। मैं यह दूसरी बात कहता हूं। लड़ाई के मौके खोजना—सत्य के लिए, सचाई के लिए ईमानदारी के लिए अगर अभी न लड़ सकोगे तो बुढ़ापे में कभी नहीं लड़ सकोगे। अभी तो मौका है कि ताकत है, अभी मौका है कि शक्ति है, अभी मौका है कि अनुभव ने तुम्हें बेईमान नहीं बनाया है। अभी के संघर्ष से जो आत्मा है वह निखरेगी। और मैं कहता हूं कि जो आदमी एक क्षण को भी पूरे अर्थों में जीवन का रस जान लेता है उसकी फिर कोई मृत्यु कभी नहीं होती। वह अमृत से संबंधित हो जाता है। युवा होना अमृत से संबंधित होने का मार्ग है, युवा होना आत्मा की खोज है, युवा होना परमात्मा के मंदिर पर प्रार्थना है।

आचार्य श्री के विरुद्ध अहमदाबाद कोर्ट में दायर मुकदमे के कुछ तथ्य

ता० १९–८–६९ को उपरोक्त मुकदमे की पेशी पर, जिस समय आचार्य श्री अदालत में पहुंचे, अनेक वकीलों और हजारों साथियों ने उन्हें घेर लिया।

अदालत ने आचार्य श्री को कहा कि वादी ने उन पर हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप लगाया है।

आचार्य श्री का अदालत को उत्तर :—जिन मित्र ने शिकायत की है उनने मुझे सुना नहीं या गलत सुना है, या गलत प्रेस रिपोर्ट से समझा है।

मैंने जो कुछ कहा है वह टेप है, अदालत में सुन लिया जावे (आचार्य श्री को इससे और अधिक बोलने की आवश्यकता अदालत ने नहीं समझी)

तद्उपरांत—

अदालत ने वादी के वकील से कैफियत मांगी कि आचार्य श्री की अदालत में क्यों उपस्थिति चाही गई। तो वादी के वकील ने कहा कि जितनी देर आचार्य श्री अदालत में रहेंगे उतनी देर अहमदाबाद की हद्द में कोई प्रवचन न हो। (इस पर पूरी प्रबुद्ध जनता हंस पड़ी) और मुकदमे की प्रगति में बाधा न हो (इस पर अदालत ने आदेश दिया कि "Court will proceed in absence of Acharya ji")

आचार्य श्री के वकील ने भी समझाया कि वादी को तो आचार्य श्री का पक्का पता तक नहीं मालूम था फिर भी आचार्य श्री ने मुकद्दमे की सूचना पाते ही वकालत नामा भेज दिया व उपस्थिति को उत्सुक रहे। आचार्य श्री के स्थान–स्थान पर कार्यक्रम कई संस्थाओं से नेशन वाइज बनाये जाते हैं, इसलिये सबकी सुविधा हेतु आचार्य श्री की उपस्थिति रद्द की जावे।

इस पर अदालत ने आदेश दिया कि अदालत में उपस्थित कर उन्हें बोलने से रोकना ठीक नहीं है, आचार्य श्री स्वतः उपस्थित रहने को उत्सुक हैं कि वे आवें। उनके वकील भी उनकी समय पर उपस्थिति का आश्वासन देते हैं। इसलिये आचार्य श्री की उपस्थिति रद्द की जाती है।

यह आदेश सुनकर सारी जनता अदालत में ही "आचार्य श्री जिन्दाबाद" के नारे लगाने लगी। इस पर अदालत ने समझाया कि इन्हीं कारणों से अदालत उनकी उपस्थिति नहीं चाहती है।

इसके उपरांत आचार्य श्री को हजारों लोगों ने घेर लिया और उन्हें ३० गज की दूरी तक जाने के लिये १० मिनिट से भी अधिक लग गए। जनता ने शिकायत भी की कि उनके मुकदमे की सूचना समाचार पत्रों में न देकर जनता को उनके दर्शन और तथ्यों को समझने से रोका गया है।

प्रस्तुतकर्त्ता : श्री राधेरमण मिश्रा,
जबलपुर

जीवन और जगत–मात्र एक दृष्टि

हम वही देखते हैं जो हम हैं। हमारी दृष्टि ही हमारा जगत और जीवन है। जैसी दृष्टि है वैसी ही सृष्टि हो जाती है। जीवन दुख मालूम हो तो जानें कि दृष्टि दुख की है और जीवन को नहीं दृष्टि से बदलने में संलग्न हो जायें। दृष्टि को बदलने का अर्थ है स्वयं को बदलना। स्वयं पर ही सब निर्भर है। स्वयं में ही नर्क है और स्वयं में ही स्वर्ग। स्वयं में ही संसार है और स्वयं में ही मोक्ष। जो है वह तो सरा से वही है किन्तु एक दृष्टि उसे बंधन बना देती है और दूसरी मुक्ति। अहंकार के बिन्दु से देखने पर जीवन नर्क हो जाता है क्योंकि वह दृष्टि सर्वविरोधी है। सर्वसत्ता से भिन्न और विरोध में होकर ही तो मैं 'मैं' हो सकता है। मैं होने की चेष्टा सर्व से संघर्ष और प्रतिरोध की साधना है। ऐसी चेष्टा से ही चिंता फलित होती है और संताप का जन्म होता है। इससे ही मिटने का और मृत्यु का भय पैदा होता है। सब खंड और सब विभाजन मनुष्य कल्पित हैं। मैं हूं तो खंड में हूं। मैं नहीं हूं तो अखंड में हूं। और खंड में होना बंधन है, अखंड में होना मुक्ति है। मैं हूं तो दुख में हूं क्योंकि वह होना ही सतत् द्वन्द है, युद्ध है, संघर्ष है। मैं नहीं हूं तो आनन्द में हूं क्योंकि न हो जाना अनन्त शांति है। मैं से मुक्त होते ही चेतना परम्परा से मुक्त हो जाती है। मैं से वियोग परमात्मा से योग है। अहंकार शून्यता के इस बिन्दु से भी जगत देखा जा सकता है और स्वयं को शाँत, आनंद में अनुभव किया जा सकता है।

"मनुष्य एक स्थिति"

मनुष्य
जो भीतर होता है
साधारणतः
ठीक उसके विपरीत
कहर
स्वयं को प्रगट करता है
आत्म हीनता से पीड़ित
पद खोजते हैं
आत्म दरिद्रता से ग्रसित
धन खोजते हैं
अहंकारी
विनीत बन जाते हैं
अतिकामी
ब्रम्हचारी हो जाते हैं
साधुता में
स्वयं को
भुला लेना चाहते हैं।

"मनुष्य–एक चित्र"

मनुष्य का मन अतियों में जीता है।
घड़ी के पेन्डुलम की भाँति ही उसकी गति है।
वह मध्य में कभी नहीं ठहरता।
एक 'अति' से दूसरी 'अति' यही उसका यात्रा–पथ है।
और अति दुख की जननी है।
अति चिन्ता और तनाव पैदा करती है।
एक अति से ऊबे तो तत्क्षण दूसरी अति के प्रति
आकर्षण हो जाता है।
भोग छोड़ा तो त्याग को पकड़ लिया।
धन छोड़ा तो दरिद्रता को पकड़ लिया।
शरीर भोग ही उल्टा होकर शरीर-योग बन जाता है।
इन्द्रिय भोग ही इन्द्रिय दमन बन जाता है।
चेतना दोनों ही अतियों में शरीर के तट से
बंधी रहती है।

लुधियाना यात्रा : एक रिपोर्ताज

—शिव

आचार्य श्री रजनीश के साथ होना एक आनंद है। मैं उनके निकट होता हूं तो विचारों की दौड़ प्रायः खो गई होती है और चित्त एक अपूर्व शांति का अनुभव करता है। कितना भी दुखी व परेशान हूं, उनके निकट आते ही सारे तनाव शिथिल पड़ जाते हैं और जी हल्का होकर एक ताजगी से भर जाता है। वे जब मुझसे ही बातें कर रहे होते हैं उस समय तो मुझे किसी बाहरी दुनिया का स्मरण भी नहीं होता। जाने कैसे आनंद में होता हूं, जाने कितना उल्हास रहता है, जाने कितनी उत्फुल्लता……। उनसे विदा लेने पर ही बाहर के जगत का ख्याल आता है। और यह बात मेरे ही साथ नहीं, अनगिनत मित्रों को ऐसा अनुभव हुआ है, हो रहा है। कितनों ने कितनी बार मुझी से ऐसा कहा है, कितनों को ऐसी स्थिति में मैंने स्वयं देखा है। सच तो यह है कि अब मैं समझता हूं कि क्राइस्ट ने कैसे अंधों को आंखें दीं, कैसे रोगियों को निरोग किया और कैसे उनका स्पर्श या कब्रों से मुर्दे जी उठे। कई बार मुझे आचार्य श्री से ईर्ष्या भी हुई है और यह एक सचाई है मैंने अब तक से जीवन में पृथ्वी पर किसी अन्य व्यक्ति को नहीं देखा–सुना, जिससे मैं ईर्ष्या कर सकूं। तो आइये. ऐसे आचार्य रजनीश जी के साथ हम आज लुधियाना यात्रा पर चलें—

१ अगस्त की रात……। हम जबलपुर से इलाहाबाद पहुंचे हैं बम्बई हावड़ा मेल से। हमारी ट्रेन लेट है। 'अपर इंडिया' जा चुकी है। हमें तूफान–एक्सप्रेस आने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी अर्थात लगभग ५ घन्टे……। हम प्रतीक्षालय पहुंचे हैं। आचार्य श्री एक कुर्सी पर बैठ गए हैं, एक दूसरी पर पैर को सहारा दिए हैं। उनके सामने की ही खाली है। मैं यहां, उनके ठीक सामने, बैठना नहीं चाहता, पर जब वे ही बैठने को कहते हैं तो दूसरा कोई चारा नहीं रह जाता। अतः मैं बैठ गया हूं और मन ही मन सोच रहा हूं—यह मनुष्य मात्र का प्रेमी, पथ प्रदर्शक, यह दुनिया का महान विचारक, यह कृष्ण और महावीर जैसा वीतराग पुरुष… अब पांच घन्टे कुर्सी पर बैठकर बितायेगा। इन्हीं सोच-विचारों ने मेरा वहाँ बैठे रहना असंभव कर दिया है। मैं चुपचाप उठकर बाहर निकल आया हूं और टहलते–टहलते रात बिता दिया हूं। सुबह लगभग ४½ बजे हम प्लेट फार्म पर आ गए हैं। आचार्य श्री को देखते ही कुछ पढ़े-लिखे संभ्रांत युवक उनके पास आ गए है और अपनी बातें उनके समक्ष पेश की हैं। आचार्य श्री ने उन्हें जो बताना–समझाना था बताया समझाया है। अब 'तूफान–एक्सप्रेस' आ गई है और हम गाड़ी में बैठ गए हैं। वे युवक मुग्ध से खड़े हैं और आचार्य श्री को बिदा देते हुए फिर भेंट होने की आशा व्यक्त कर रहें हैं।

'तूफान–एक्सप्रेस चल पड़ी है। आचार्य श्री प्रथम श्रेणी में हैं, मैं तृतीय श्रेणी के 'टू–टायर' में। मुझे सोने को बर्थ मिल गई है, पर नींद, नहीं आती। सोचता हूं आचार्य श्री रात भर जगे हैं और अब दिन मैं भी जगना ही पड़ रहा होगा क्योंकि सीटें भरी होंगी। दिन में प्रथम श्रेणी में सोने को बर्थ कहाँ मिलती है। मैं इसी जिज्ञासा वश अनेक स्टेशनों पर उतरता हूं और सचमुच उन्हें बैठा ही पाता हूं। दोपहरी में एकाध घन्टे को मुझे नींद आ गई है। जगने पर फिर आचार्य श्री को जाकर देखा हूं और उन्हें जगते पाया हूं और इससे

दुखी दुआ हूं। उन्होंने कई बार मेरे खाने-पीने के बारे में पूछ-तांछ की है। एक बार उन्होंने मुझे 'केक' खिलाया है। 'केक' कितना मीठा था, अगर कहूं तो आप उसकी मिठास का अनुमान शायद न लगा पायें।

२ अगस्त की सन्ध्या हम दिल्ली पहुंचे हैं। स्टेशन पर लाला श्री सुन्दरलाल जी व अनेक युवक-युवतियाँ लेने आए हैं। लोग आचार्य श्री को पाकर कितने विह्वल हो जाते हैं, यह तो देखते ही बनता है। हम गाड़ियों में बैठकर लाला जी के निवास पर पहुंच गए हैं। यहां भी बहुत सारे प्रेमी आचार्य श्री से मिलने की आकुलता लिये बैठे थे। सभी मिलते हैं। फिर हमने स्नान–भोजनादि किया है और कुल २.३० घण्टे बाद ही लुधियाना के लिए प्रस्थान कर दिया है। 'फ्रन्टियर मेल' में वातानुकूलित डिब्बा है। मैं प्रसन्न हूं कि आचार्य श्री को सोने को मिल जायगा क्योंकि आज ५ बजे पहुंचकर ७.३० बजे ही बोलना है।

३ अगस्त की प्रातः के पौने पाँच बजे हैं। हम लुधियाना प्लेट फार्म पर उतर गए हैं। आचार्य श्री का जो भव्य स्वागत यहाँ हो रहा है, वह बताया जाना बहुत कठिन है। बहुत सारे लोग हैं। कोई उनसे लिपटा जा रहा है। कोई दूर से खड़े ही उनके चरणों में गिर पड़ता है। आचार्य श्री को फूल-मालाओं से लाद दिया है प्रेमियों ने। एक मित्र आचार्य श्री से गले मिलकर सर उठाए तो मैंने उन्हें प्रणाम किया है। प्रत्युत्तर में वे मुस्कराते हुए आत्म विस्मृत से मेरी ओर दौड़ आए हैं और मेरा हाथ अपने हाथों में लेकर चूम लिया है। साथ ही धीमे व मधुर स्वर में शुभ नाम पूछा है। मेरे द्वारा नाम बताये जाने पर वे, जैसे कहीं खोए-खोए से मेरा नाम दुहरा देते हैं—शिव·····। बाद में पता चला आप श्री कपिल भाई हैं। एस० एस० पी० श्री गिल तो आश्चर्य जनक रूप से आत्म विभोर हैं। इन्हीं के आमत्रण विभोर हैं पर आचार्य श्री पहली बार लुधियाना पधारे हैं।

प्रातः ७.३० बजे दिरेशी हाल में आचार्य श्री का प्रवचन·····। हाल काफी बड़ा है। पहला दिन है, लुधियाना में पहली बार······ पर हाल भरा है। शाम की मीटिंग बाहर मैदान में हो, आचार्य श्री ने इच्छा व्यक्त की है।

संध्या ८–३० बजे खुले मैदान में भाषण······। कोई ८–१० हजार मित्र······ । सभी विस्मित····· ४ अगस्त की प्रातः पुनः उसी मैदान में भाषण····। विमुग्ध प्रेमियों की अपार भीड़। १० बजे 'आर्य कालेज' में भाषण। कारों, स्कूटरों, तांगों, रिक्शों, साइकिलों का तांता·····बहुत बड़ा हाल···पूरा खचाखच भरा। कई सैकड़ों विद्यार्थी बाहर खड़े········। आचार्य श्री के भाषण जितनी तन्मयता से सुने जाते हैं उतनी तन्मयता से किसी का भाषण सुना जाते मैंने नहीं देखा है। स्वर्गीय बालकृष्ण भट्ट का एक लेख कभी पढ़ा था उन्होंने लिखा है: 'बातचीत दो व्यक्तियों के बीच ही संभव होती है, तीसरे के होने पर बातचीत नहीं हो पाती'। मैं समझता हूं बहुत ठीक लिखा है उन्होंने। पर आचार्य श्री के भाषण में जाने क्या जादू है, जाने कैसा संबंध उनसे स्थापित हो जाता है कि प्रत्येक श्रोता के लिये आचार्य श्री व स्वयं उसके अतिरिक्त अन्य कोई रह ही नहीं जाता। अन्य की उपस्थिति का ख्याल भी नहीं रहता।

संध्या दिरेशी ग्राउंड पर पुनः अपारजन समूह····जैसे कोई महायज्ञ हो ······ और शांति इतनी········निस्तब्धता इतनी कि जैसे किसी घाटी में कोई 'अकेला' खड़ा हो········जैसे हवा भी बहना बंद हो गई हो और फिर भी एक शीतलता हो···· । आचार्य श्री के भाषण इतने मर्म-स्पर्शी होते हैं कि कई बार आसुएं नहीं संभलतीं। आज भी बहुत सारे मित्र रो पड़े हैं। इस 'रो पड़ने' में कितनी सरलता है, कितना प्रेम है। इसे तो मात्र अनुभव किया जा सकता है।

५ अगस्त की प्रातः पुनः दिरेशी मैदान में आचार्य श्री ने हजारों की महती सभा को सम्बोधित किया। १० बजे कृषि विश्व विद्यालय में महान क्रान्तिकारी उद्‌बोधन····बहुत बड़ा हाल · खचाखच भरा···· ···

हजारों छात्र बाहर खड़े ध्वनि विस्तारक यंत्र की ओर मंत्र-मुग्ध निहारते ..... । आचार्य श्री के भाषण के बाद उपकुलपति महोदय ने ५ मिनिट तक बोला। वे आचार्य श्री के भाषण से इतने प्रभावित हुए हैं कि उनकी वाणी में भी अद्‌भुत ओज है अजीब जोश है वे अब आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहें हैं तथा हमारा विश्वविद्यालय फिर सुन सकेगा ऐसी आशा रख रहें हैं।

३ व ४ अगस्त को मध्यान्ह ३ बजे से प्रेमियों जिज्ञासुओं ने आचार्य श्री से व्यक्तिगत मुलाकातें कीं। ५ अगस्त के मध्यान्ह ३ बजे श्री गिल साहब के निवास-स्थान पर नगर के प्रतिष्ठित वकील, डाक्टर, मजिस्ट्रेट एवं प्रोफेसर्स आदि की एक विशेष प्रश्नोत्तर-वार्त्ता ..।

५ अगस्त की संध्या लुधियाना में अंतिम उद्‌-बोधन .. ओह .. जिधर भी देखता हूं सिर ही सिर दिखाई पड़ते हैं। २५-३० हजार से कम तो क्या होंगे। हजार के ऊपर तो लोग मैदान के किनारे सड़क पर खड़े हैं, सैकड़ों चहार दीवारी पर बैठे हैं। मैदान में जगह न होने से कितने अपनी कारों में बैठे सुन रहे हैं। आज भाषण समाप्त होने पर प्रेमियों ने आचार्य श्री को घेर लिया है..... वे काफी देर बाद कार तक पहुंच पाये हैं। कार भी चलने नहीं पाती। जैसे आचार्य श्री को कोई छोड़ने को तैयार नहीं है। बड़ी देर बाद मुश्किल से कार चल पाती है।

रात १०-३० बजे.... हम फिर लुधियाना स्टेशन पर हैं। सैकड़ों की संख्या में आचार्य श्री के प्रेमी उन्हें विदा देने आये हैं। अमृतसर व जालंधर से कई प्रेमी अपने-अपने परिवारों के साथ आये हैं। वे तीन दिन होटलों में ठहरे रहे। आज वे भी विदा देने आए हैं। युवक-युवतियां, वृद्ध-बाल सभी.... । आचार्य श्री को फिर सुगंधित फूल-मालाओं से लाद दिया गया है और लोगों की आंखे गीली हो आई हैं। भाई कपिल तो मेरे ही गले में माला डाल दिए हैं। कहते हैं—'मैं तो तुम्हें ही पहनाए देता हूं अपनी माला' यह कहते-कहते वे मुझसे लिपट जाते हैं, मेरे होंठ उनकी गर्दन चूम लेते हैं। हम बड़ी देर तक लिपटे रहते हैं—कहते कुछ नहीं ..... । कुछ कहा जा भी नहीं सकता। यह मैं महसूस करता हूं कि उन्होंने माला जो मेरे गले में पहनाई वह आचार्य श्री के प्रति उनके कितने सम्मान व कितने प्रेम को प्रकट करती है। खैर .....अब गाड़ी चल पड़ी है। आचार्य श्री के वातानुकूलित डिब्बे के बगल में ही मेरा डिब्बा है—प्रथम श्रेणी ..... । मैं देख रहा हूं लोग हाथ हिला रहे हैं। प्रायः सभी की आंखों में आँसू हैं। मुझे आचार्य श्री पर गुस्सा आया है—यह जादूगर सभी को लूट लेता है और खुद अछूता-मुसकाता-चल देता है.... मेरी भी आंखें भर आई हैं—जाने क्यों ? शायद आचार्य श्री के प्रति लोगों की प्रेम-मिश्रित पीड़ा देखकर..... ।

प्रातः हम दिल्ली पहुंचे हैं। लाला सुन्दरलाल जी व शांतिलाल जी लेने आए हैं। हम लाला जी के घर पहुंचे हैं। फिर वहाँ मिलने वालों की भीड़ .....भोजन फिर कुछ क्षणों का विश्राम । फिर मध्यान्ह २-३० बजे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध एवं देश के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि डा० हरिवंशराय बच्चन आए हैं। यह बच्चन जी की प्रथम भेंट थी और मैंने ही इसका आयोजन किया था। बच्चन जी हाथ जोड़े हुए आचार्य श्री की ओर बढ़ते हुए कहते हैं—मेरा नाम बच्चन है। आचार्य श्री मुस्कानों के साथ उनका स्वागत करते हैं। बच्चन जी अब बैठ गए हैं और आचार्य श्री को मधु-शाला भेंट करते हुए कहा है—"पुरानी परंपरा रही है कि किसी संत-महापुरुष के पास जायं तो कुछ लेकर जायं"। और कि, "वैसे तो ४०-५० किताबें हो गई हैं पर यह कुछ लोकप्रिय अधिक हुई है। मैं तो जीवन भर यही खेल खेलता रहा हूं"। आचार्य श्री मुस्कराये ही हैं कि तभी शांतिलाल जी ने बच्चन जी से गीत सुनाने का अनुरोध किया है। बच्चन जी मधुशाला की ही तीन रूबाइयाँ सुना जाते हैं अब आचार्य श्री बोले है—अच्छा है, सब कुछ को खेल समझ कर खेलना अच्छा हैं। किसी चीज को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए। मगर जब तक

खेल में भी 'मैं' मौजूद हूं, तब तक बात नहीं बनती। खेल भी 'मैं' नहीं खेल रहा हूं। खेल हो रहा है बस···'। बच्चन जी जैसे भीतर कहीं कुछ टटोल रहे हैं—अनुभव कर रहे हैं और अगर मेरी स्मृति धोखा नहीं दे रही है तो वे भी दुहरा दिए हैं—'खेल हो रहा है, खेल भी 'मैं' नहीं खेल रहा हूं'। आचार्य श्री ने पुनः बोलना शुरू किया है और १५ मिनिट तक बोले हैं कि तभी एक डा० त्रिपाठी २०–२५ छात्राओं के साथ आ पहुंचे हैं। आज ६ अगस्त है आज ही के दिन हिरोशिमा में बम गिरा था। अतः आज शांति–दिवस मना रहे हैं। वे 'शांति' और गाँधी' को लेकर कुछ प्रश्न करते हैं। आचार्य श्री कहते हैं—'शांति–शांति' चिल्लाने या गांधी का नाम रटने से शाँति नहीं आएगी, यह बात समझ लेनी होगी। अशाँति क्यों है, हम अशाँत क्यों है, यह समझ में आ जाये तो जरूर शाँति लाई जा सकती है। हिंसा भी कई तरह की हो सकती है। यह भी हिंसा है कि मैं कहूं कि मेरी बात मान लो वर्ना छाती में छुरा भोंक दूँगा। और यह भी हिंसा है कि कहूं कि मेरी बात मान लो वर्ना छाती में छुरा भोंक लूँगा। बल्कि यह अधिक खतरनाक है क्योंकि आपको छुरा भोंक देने को कहूं तो आप भागकर भी बच सकते हैं पर अपने को छुरा भोंक लेने को तैयार हो जाऊं तब तो आप भाग भी नहीं सकते हैं। तभी मिलने आए पहले से विराजमान कई सन्यासियों में से एक उत्तेजित हो उठे और आचार्य श्री से बहस करने लगे। बहस कहना भी शायद संगत नहीं क्योंकि वे स्वयं बोलते जाते हैं। आचार्य श्री को तो बोलने ही नहीं देते हैं। वे बोलकर चुप होते हैं तो आचार्य श्री कुछ कहने को होते हैं ··· तभी वे पुनः जोर से बोलने लग जाते हैं और आचार्य श्री मुसकरा कर रह जाते हैं। उन्होंने कहा था—महात्मा गाँधी इतने महान व्यक्ति ·· जिसे सारी दुनिया महात्मा मानती है आप उसकी आलोचना करते हैं ?' आचार्य श्री ने कहा था—मुझे जो ठीक लगता है मैं वही कह सकता हूं। कोई जरूरी नहीं है कि आप उसे मान लें। मेरा तो निवेदन इतना ही है कि सोचें–समझें, न ठीक लगे तो कूड़े में फेंक दे ·'। सन्यासी ने कहा—आज तक बुद्ध, महावीर आदि इतने महापुरुष हुए हैं क्या आप कहना चाहते हैं कि वे सब गलत थे ? आचार्य श्री ने कहा—'अभी तो समय नहीं है, फिर कभी हम इस पर विस्तृत चर्चा करेंगे, मगर इतना तो आज कहे ही जाता हूं कि वे सब गलत थे'। गाड़ी का समय हो चुका था अतः सभी उठ गए। सन्यासी महोदय ने उठने पर अपने उभर आए आवेश को दबाते–छुपाते हुए क्षमा माँगी कि आपको मैंने कष्ट पहुंचाया। आचार्य श्री ने मुसकाते हुए कहा—नहीं, नहीं। आपने कोई कष्ट नहीं पहुंचाया है। सन्यासी लोग बिदा हो गए। डा० त्रिपाठी व बच्चियाँ अब विदा हो रहीं हैं। उन्होंने खेद प्रकट किया कि हमें आपके विचार प्रिय लग रहे थे। हम और सुनना चाहते थे पर सन्यासी महाराज के कारण हमारी बातें ठीक से न हो पाईं। अब वे भी चले गए हैं और हम सामन समेटने लगे हैं। आचार्य श्री बाथरूम गए। बाहर निकले तो वह 'क्षण' आया जिसे मैं इस यात्रा का सर्वाधिक मार्मिक क्षण कह सकता हूं। बच्चन जी ने कहा—आचार्य श्री में एक प्रॉफेसी करना चाहता हूं। आचार्य श्री ने कहा—क्या ? बच्चन जी ने कहा—you are a tragic person and you will be crucified. [आप इतने सत्य हैं कि आप सूली पर चढ़ा दिये जायंगे] यह कहते कहते बच्चन जी की आँखों में आँसू छलछला आये हैं। मुझे भी बच्चन जी की भविष्य वाणी सुन रोना आ गया है। आचार्य श्री ने मेरे कंधे को थपथपाते हुए बच्चन जी की ओर देखते हुए मुसकान के साथ कहा है—आप ठीक कहते हैं।

हम अब दिल्ली स्टेशन जा रहे हैं। दो कारें हैं। एक में पीछे आचार्य श्री बैठे हैं उनकी दाईं बगल लाला जी और उनकी दाईं ओर बच्चन जी। सामने चालक की बाईं ओर मैं। दूसरी गाड़ी में शाँति लाल जी वगैरह हैं। आचार्य जी व बच्चन जी में कुछ बातें अभी भी होती चल रही हैं। मैं एकाध दिन दिल्ली ठहरना चाहता हूं। अतः आचार्य श्री को विदा देकर मैं बच्चन जी के साथ कार में उनके निवास–स्थान पर जाता हूं। रास्ते में बच्चन जी कहते हैं—"इनके विचारों को फैलाने के लिए

एक संगठन होना चाहिए। इस व्यक्ति ने हिन्दुस्तान की नब्ज पकड़ ली है। वे बोलते हैं तो एक लहर सी उठती है। इन्होंने मुझे बेहद प्रभावित किया है। तुम्हें इतने बड़ें महापुरुष की निकटता मिली है, अपने लेखन का सदुपयोग करो, एक 'प्रवेशिका' लिख डालो ·····आचार्य श्री के विचारों के सम्बन्ध में इन्ट्रॉडक्शन जैसा। और कि, १ अक्टूबर तक तो मुझे अवकाश नहीं है। १ अक्टूबर के बाद आचार्य जी जब भी ८-१० दिनों को इकट्ठे जबलपुर में रहें मुझे सूचना देना। मैं जबलपुर आना चाहता हूं ८-१० दिनों को। जबलपुर लौटकर मैंने बच्चन जी को लिख दिया है कि आचार्य जी ७ से १२ अक्टूबर व १६ से २६ अक्टूबर जबलपुर रहेंगे। उनका उत्तर भी आ गया है पर वे अभी तिथि निश्चित नहीं कर पाये हैं। पर मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं ही क्यों, जबसे मैंने उपर्युक्त खबरें जबलपुर के 'जीवन जागृति केन्द्र' को बताया है वह भी उनके आगमन की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा है।

●●●

आचार्य श्री रजनीश की अमृतवाणी की
त्रैमासिक पत्रिका

"ज्योति शिखा"

(मनुष्य के आध्यात्मिक पुनरुत्थान के लिऐ समर्पित)

सम्पादक : श्री महिपाल

वार्षिक शुल्क : ५ रु० — एक प्रति : १.२५ न.पै.

प्राप्ति स्थल—
जीवन जागृति केन्द्र, एम्पायर बिल्डिंग, रूम नं० ५३,
दादाभाई नौरोजी रोड, बम्बई-१.
फोन : २६४५३०

आचार्य श्री रजनीशजी की सृजनात्मक जीवन दृष्टि का
पाक्षिक पत्र

युक्रांद

वार्षिक शुल्क—१२)

देश के कोने-कोने में
विक्रय एजेन्ट नियुक्त करना है

सम्पर्क करने तथा शुल्क भेजने का
पता
अरविंदकुमार, सदस्य, युक्रांद प्रकाशन समिति,
कमला नेहरू नगर, जबलपुर। फोन : २६५७.

पत्र प्रेरणा

[नीचे एक पत्र प्रस्तुत है आचार्य श्री का जो श्री अनूप बाबू, सुरेन्द्रनगर को लिखा गया है। श्री अनूप बाबू ने आचार्य श्री से आचार्य श्री की जन्म तारीख और समय बताने को आग्रह किया था किसी ज्योतिषी मित्र के परामर्श से—उसी संदर्भ का है यह पत्र]

मेरे प्रिय।

प्रेम।

आपका पत्र मिला है।

जन्म-समय की खोज-खबर करनी पड़ेगी।

दिन शायद ११ दिसम्बर है। लेकिन यह भी पक्का नहीं।

लेकिन ज्योतिषी मित्र को कहें : क्यों परेशान होते हैं ?

भविष्य आ ही जायेगा, इसलिये उसकी ऐसी चिन्ता नहीं करनी चाहिए !

फिर कुछ भी क्यों न हो—अंततः सब बराबर है।

धूल धूल में वापिस लौट जाती है।

और जीवन जल पर खींची रेखाओं सा विलीन हो जाता है।

वहां सबको मेरे प्रणाम कहें।

रजनीश के प्रणाम

१२।१२।१९६८

●

श्रीमती जयवंती शुक्ल जूनागढ़ को लिखा गया आचार्य श्री का एक पत्र

प्यारी जया,

प्रेम। तेरा पत्र मिला है। तेरे प्राणों की प्यास को, मैं भलीभांति जानता हूं। और वह क्षण भी दूर नहीं है, जब वह तृप्त हो सकेगी। तू बिलकुल सरोवर के किनारे ही खड़ी है। केवल आंख ही भर खोलनी है। और मै देख रहा हूं कि पलकें खुलने के लिए तैयारी भी कर रही है। फिर मैं साथ हूं—सदा साथ हूं—इसलिए जरा भी चिन्ता मत कर। धैर्य रख और प्रतीक्षा कर। बीज अपने अनुकूल समय पर ही टूटता है और अंकुरित होता है। वहां सबको मेरे प्रणाम कहना। शेष मिलने पर।

रजनीश के प्रणाम

प्रभात २९-९-१९६८

कुछ और चाहिए.....!

एक माली के घर मैं मेहमान था । घर के एक अंधेरे कोने में बीजों का ढेर लगा है । वे फूलों के बीज बहुत उदास हैं, उनकी आँखों से बहे हुए आँसुओं से गीले हैं। मैंने उन बीजों को पूंछा इतनी उदासी क्यों, इतनी चिन्ता, इतनी परेशानी क्यों ? वे बीज कहने लगे हम बीज होकर पर्याप्त नहीं हैं जब तक हम वृक्ष न हो जावें। और जब तक हमारी टहनियों पर फूल न खिलें और सुगन्ध न फैले और हम मुक्त सूर्य के प्रकाश से भरे आकाश में नाच न सकें फूलों की तरह तब तक हम बेचैन ही रहेंगे। बीज एक सम्भावना है वृक्ष बने, फूल बने तो ही आनन्दित हो सकता है। मैंने ये सुना और सोचने लगा मनुष्य भी तो एक बीज है एक सम्भावना है। मनुष्य रह के ही वह पर्याप्त नहीं है वह भी प्रभु के द्वार तक पहुंचे और अन्ततः प्रभु ही बन जाय तो ही पूर्ण हो सकता है। तब तक उदासी ही रहेगी, तब तक बेचैनी ही रहेगी, तब तक संताप और चिन्ता और दुख उसे घेरे रहेंगे। तब तक जीवन एक अन्धेरा ही होगा। मनुष्य चूंकि अपने में पर्याप्त नहीं है, अपने को पार किए बिना मन तृप्त भी नहीं हो मकता है। न धन दे सकता है तृप्ति, न यश, न पद सब कुछ पा लिया जाय जगत जो दे सकता है फिर भी भीतर कोई अपूर्णता, कोई खालीपन, कोई रिक्तता शेष रह जाती है। कुछ है जो नहीं भरता, कुछ है जो भरे जाने की मांग करता है, कोई घाव, कोई खाली जगह कोई रिक्तता पुकार करती है, कोई अभाव बुलाता है मुझे भरो और जब तक उस अभाव को न भरा जाय, तब तक मनुष्य की दौड़, खोज बन्द नहीं होती। फिर गलत को चाहे कोई कितना ही चाहे तो भी गलत से उसे नहीं भरा जा सकता। जिसकी प्यास हीरों की हो उसे कंकड़-पत्थरों से तृप्त नहीं किया जा सकता है। मनुष्य के प्राणों में भी कोई प्यास है प्रभु को पाने की, परम आनन्द को पाने की। क्षण भर को सुख देने वाली वस्तुएं उसे पूरा नहीं करती हैं। और अगर वह उनकी ही दौड़ में लगा रहे तो जीवन समाप्त हो जाता है जीवन को बिना जाने ही।

एक राजधानी में एक बड़े महल में आग लग गई। भवनपति बाहर करीब-करीब बेहोश पड़ा है। सैकड़ों लोग आग लगे मकान से सामान बाहर ला रहे हैं। कीमती फर्नीचर है, कीमती चित्र हैं, मूर्तियाँ हैं, कागजात हैं, धन की तिजोड़ियां हैं और फिर आखरी बार उन लोगों ने आकर उस भवनपति को कहा-कुछ और जरूरी रह गया हो तो कह दें क्योंकि अन्तिम बार हम और भीतर जा सकते हैं। फिर दुबारा आग इतनी बढ़ जायेगी कि भीतर जाना असम्भव है। उस भवनपति को कुछ भी होश नहीं है। उसने कहा—मुझे कुछ भी याद नहीं पड़ता। तुम ही एक बार जाकर और देखलो। वे लोग भीतर गए। लेकिन हर बार वे खुशी से भरे हुए लौटे थे क्योंकि कुछ बचाकर लाए थे इस बार वे रोते छाती पीटते लौटे। इस बार भी वे कुछ लाए थे लेकिन वह उस भवनपति के एकलौते बेटे की लाश थी। वे चिल्लाने लगे और रोने लगे और कहने लगे बड़ी भूल हो गई। हम सामान को बचाने में लग गए और सामान का एक मात्र मालिक मर गया। हम उसका ध्यान ही भूल गए। मैं भी उस भीड़ में खड़ा था। मैं सोचने लगा क्या सभी आदमियों के साथ ऐसा ही नहीं होता है। जीवन में हम वस्तुएँ बचाने में लग जाते हैं और वस्तुएँ बचाने में पूरा जीवन समाप्त हो जाता है। और भीतर वह जो मालिक था, वह जिसे जानना था, जीना था पहचानना था जिसे पूर्णता तक पहुंचाना था वह वस्तुओं के बचाने की दौड़ में जल के नष्ट ही हो जाता है। मरते क्षण

शायद ख्याल आता है कि जीवन हमने गंवा दिया है। और जो लोग भी यश में, धन में पद में, प्रतिष्ठा में दौड़ते रहेंगे वे जीवन को ऐसा ही गंवाते रहे हैं, गंवाते रहेंगे। धर्म कहता है कुछ और चाहिए यश भी पर्याप्त नहीं, धन भी पर्याप्त नहीं सारी पृथ्वी भी जीत ली जाय, तो भी पर्याप्त नहीं। एक और जीत चाहिए—प्रेम की जीत। कुछ और चाहिए, एक और साम्राज्य—भीतर का साम्राज्य। शान्ति चाहिए अखण्ड शान्ति। और एक आनन्द चाहिए — शास्वत-आनन्द। कहाँ मिले ? कहाँ खोजें ? क्या है मार्ग उसका, क्या है द्वार, क्या है रीति ? धर्म उसका द्वार है उसकी विधि है। विज्ञान है : पदार्थ की खोज, पदार्थ के भीतर जो राज छिपे हैं उनका अन्वेषण। और धर्म है आत्मा की खोज भातर चेतना में जो रहस्य छुपे हैं उनका अन्वेषण।

विज्ञान तो बहुत बढ़ गया है लेकिन धर्म ?— धर्म तो जैसे मर ही गया हो, धर्म की तो जैसे कोई जगह ही नहीं रह गई है। इसीलिये तो मनुष्य इतना उदास, इतना कुम्हलाया हुआ है। क्योंकि मनुष्य बीज ही रह गया, बाहर सब इकट्ठा होता जा रहा है। शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान और भीतर घना अंधकार है। गहन अज्ञान है। और बाहर कुछ भी न हो अगर भीतर की सपदा मिल जाये तो सब मिल जाता है, और बाहर सब कुछ हो और भीतर की संपदा न मिले तो सब कुछ खो जाता है। इसीलिये मैं कहता हूं कि कुछ और भी चाहिये : बाहर की यात्रा से भिन्न, बाहर की यात्रा से केलग, बाहर के साम्राज्य से ऊपर कुछ और भी चाहिये। और वह कुछ का ही नाम अज्ञात में है।

विज्ञान करता है प्रयोग और तब जानता है पदार्थ को। धर्म करता है योग और तब जानता है आत्मा को। आत्मा भी जानी जा सकती है। जानी गई है। प्रत्येक जान सकता है। लेकिन जो श्रम करेंगे, वे ही उसे उपलब्ध होते हैं। जो इस दिशा में चलेंगे वे ही उस मंदिर तक पहुंचते हैं। हम अगर बाहर ही दौड़ते रहें तो भ तर कैसे पहुंचेंगे ? बाहर की दौड़ छोड़नी होगी। भीतर की दौड़ पर निकलना होगा और जो मुड़ता है एक क्षण को भी वह चकित हो जाता है। क्योंकि जो बाहर हम जन्मों,-जन्मों तक नहीं पा सके, वह भीतर मुड़ते ही पा लिया जाता है।

मैंने सुना है एक भिखमंगा एक बहुत बड़ी मान नगरी में जीवन भर भीख मांगता रहा, कोई पचास वर्ष तक, फिर वह मरा फिर लोगों ने उसकी लाश को जला दिया। उसके चीथड़े फेंक दिये, उसके बर्तन फ ड़ डाले, फिर किन्हीं को ख्याल आया कि जिस जमीन पर बैठकर वह भीख मांगता था वह जमीन भी गंदी हो गई है। थोड़ी मिट्टी भी खोदकर फेंक दें। उन्होंने मिट्टी, भी खोदी। खोदते ही वे हैरान हो गये। सात गांव वहां इकट्ठा हो गया। जरा सी मिट्टी खोदी और नीचे तो बहुत खजाने गड़े थे। वे सब भीड़ में इकट्ठे लोग कहने लगे कैसा पागल था यह भिखमंगा ? भीख मांगता रहा, और जिस जगह पर वह बैठा था। वहां अनेक खजाने गड़े हैं। और मैं सोचता हूं कि हर आदमी भी ऐसा भिखमंगा है—बाहर हाथ फैलाकर मांगता है उसे जो भीतर उसे उपलब्ध है, जहाँ वह खड़ा है जिस भूमि पर, जिस चेतना पर वहाँ थोड़ा भी खोदे तो अनंत खजाने मिल जाते हैं। और भीतर का खजाना मिले फिर तो दरिद्रता मिटती है, भिखमंगापन मिटता है कोई खजाना कितना ही बड़ा क्यों न हो, १६ मन का हो, कुबेर का हो तो भी दरिद्रता नहीं मिटती। इसलिये तो हम देखते हैं जिनके पास बहुत धन है वे भी भीतर दरिद्र हैं। और यह भी हम देखते हैं कभी कोई सड़क पर खड़ा नंगा फकीर : वह भी समृद्ध है। एक समृद्धि है जो भीतर है, उस समृद्धि को खोजे बिना जीवन सार्थक नहीं होता है। वह चाहिये ही, वह भीतर का खजाना खोजना ही है। आध्यात्म का और कोई अर्थ नहीं है। धर्म का और कोई अर्थ नहीं है। जो धर्म से समझते हैं हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध वे गलत समझते हैं।

धर्म का किसी संप्रदाय से कोई संबंध नहीं, धर्म तो भीतर का विज्ञान है, वह तो परम विज्ञान है, सुप्रीम साइंस है। उस सत्य को खोजने की जो मैं हूं और मैं कितना ही यश पाऊँ तो भी कैसे पता चलेगा कि मैं कौन

हूं ? और कितना ही धन पा लूँ फिर पता चलेगा कि मैं कौन हूं ? मैं कौन हूं इसे जानने के लिये मुझे भीतर जाना पड़ेगा, निरीक्षण करना पड़ेगा, ध्यान करना पड़ेगा, खोज करनी पड़ेगी । मौन में निःशब्द में सब विचार छोड़कर सब भाव छोड़कर वहां खड़ा होना पड़े । वहां भीतर जहां से सारा जीवन निकलता है और फैलता है– जहाँ से विचार उठते हैं, भाव उठते हैं––कल्पनायें उठती हैं । उस सबके मूल श्रोत पर, गंगोत्री पर, स्वयं की गंगोत्री पर खड़ा होना पड़ेगा । वहां एक क्षण को भी कोई पहुंच जाये तो फिर कभी भी दरिद्र नहीं होता है । दुखी नहीं होता, फिर जानते ही अमृत उपलब्ध हो जाता है । ज्ञात होता है मेरी कोई मृत्यु नहीं । मैं था : सदा था, और मैं रहूंगा, सदा रहूंगा । जान लेते ही ज्ञात होता है कि मेरे लिये कोई दुख नहीं, कोई पीड़ानहीं,सब दुख शरीर के सब पीड़ामस की है और मैं न मनहूंऔर न शरीर हूं । उसे जानते ही ज्ञात होता है कि वे पागल हैं जो खोज रहे हैं । चूंकि जो बाहर नहीं हैं वह बाहर नहीं मिल सकेगा वह भीतर है और भीतर ही मिल सकता है ।

एक फकीर औरत थी । एक सांझ लोगों ने देखा घर के बाहर वह कुछ खोजती है । सूरज ढलता है । लोग पूंछने लगे क्या खोजती है ? उसने कहा मेरी सुई गुम गई है, कपड़ा सीती थी तो सुई गिर गई है । लोग भी खोजने लगे बूढ़ी औरत की सहायता करने के लिये । लेकिन तभी उनमें से एक बुद्धिमान ने पूंछा किस जगह गिरी है तेरी सुई ? रात उतरने के करीब है । ठीक पता चल जाय कि सुई कहां गिरी है तो खोजी भी जा सकती है । और उस बूढ़ी औरत ने कहा यह मत पूंछो सुई तो मकान के भीतर गिरी है । लोग कहने लगे फिर पागल हो तुम, तुम्हारे साथ हम सब भी पागल बने हुये हैं । सुई जो भीतर गुमी है भीतर ही मिल सकती है । लेकिन उस बुढ़िया ने कहा भीतर प्रकाश नहीं है, मेरे पास दिया भी नहीं है । बाहर रोशनी है इसलिये बाहर खोजती हूं । बहुत मजाक किया है उसने हम सब पर, पूरी मनुष्यता पर । हम भी बाहर खोज रहे हैं क्योंकि वहां आंखें खुलती हैं, और हाथ फैलते हैं । लेकिन संपदा भीतर है । प्रकाश को भी भीतर ले जाना पड़ेगा । और जिस दिन कोई व्यक्ति बाहर से आंख बंद करके भीतर उतरता है उसी दिन उस सब का मालिक हो जाता है । जिसे पा लेने के बाद कुछ पा लेने को नहीं बचता ।

"जीवन के विरोध में निर्वाण मत खोजो वरन् जीवन को ही निर्वाण बनाने में लग जाओ । जो जानते हैं, वे यही करते हैं । डो–जेन के प्यारे शब्द हैं : मोक्ष के लिये कर्म मत करो बल्कि समस्त कर्मों को ही मौका दो कि वे मुक्तिदायी बन जावें ।" यह हो जाता है, ऐसा मैं अपने अनुभव से कहता हूं । और जिस दिन यह संभव होता है उस दिन जीवन एक पूरे खिले हुये फूल की भांति सुन्दर हो जाता है और सुवास से भर जाता है ।

'दिमाग के बुनियादी ढांचे तोड़े बिना कोई क्रांति सम्भव नहीं'

आचार्य श्री रजनीश से विख्यात समाजवादी नेता श्री जार्ज फर्नाण्डिस की वार्ता

संकलन : श्री श्याम नारायण चौकसे

गतांक से आगे—(श्री जार्ज फर्नाण्डिस के प्रश्न : 'आप यह डिस्टिक्शन कैसे डालते हैं : हिन्दू माइंड और हिन्दू रिलीजन में ? पर आचार्य श्री का पिछले अंक से आगे उद्‌बोधन)

आचार्य रजनीश : माइंड अगर न बदले तो आप ऊपर से लीपा पोती कर सकते हैं और लीपा-पोती करने से दरारें मिटती नहीं है, सिर्फ भरती हैं, और दूसरी तरफ से दरारें फिर से पड़ना शुरू हो जाती हैं, क्योंकि जो कारण है दरारों को तोड़ने का वह भीतर काम करता रहता है। मेरा कहना है कि अगर हिन्दुस्तान से शूद्र को मिटाना है तो हिन्दुस्तान से कर्म के सिद्धांत को आमूल जड़ से उखाड़कर फेंक देना पड़ेगा। और जिस दिन आप कर्म के सिद्धांत को उखाड़कर फेंक देते हैं उस दिन आपको ये जो दरारें दिखलाई पड़ रही हैं। उनको भरना बच्चों का खेल हो जायेगा। नहीं तो आप उनको नहीं भर सकते, आप भर ही नहीं सकते।

मैं यह जो कह रहा हूं वह सिर्फ इस ख्याल से कि मैं यह कह सकूँ कि जहाँ हमें समस्यायें दिखलाई पड़ रही हैं वहाँ समस्याओं की जड़ें नहीं हैं और अगर हम समस्याओं से सीधे ही जूझते चले जाते हैं बिल्कुल तात्कालिक तो फिर हम नई समस्यायें खड़ी करते जाते हैं कोई फर्क नहीं पड़ता और बुनियादी माइंड वहीं रह जाने पर सारा काम वैसा का वैसा जारी रहता है।

जैसा मैंने कहा, गांधी ने बड़ी चेष्टा की कि हिन्दू मुस्लिम एक हो जायें, लेकिन गांधी का माइंड हिन्दू है—एक हो कैसे जायेंगे ? गांधी के द्वारा यह चेष्टा सफल हो ही नहीं सकती। गांधी की जगह ऐसा आदमी चाहिये जो खुद हिन्दु न हो मुसलमान न हो ईसाई न हो, जिसके बेसिक माइंड पर यह चोट पड़ी हो और सिर्फ आदमी रह गया हो।

गांधी जी मानते थे कि सारे धर्म समान हैं, सारे कर्म बराबर मूल्य के हैं फिर भी गांधी के मन से यह भ्रम कभी भी नहीं मिटा कि मैं हिन्दु हूं। वे यह हमेशा कहते रहे कि मैं हिन्दू हूं, और गांधी जैसे आदमी का हिन्दू होना भारत के लिये बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ। गांधी का हिन्दु होने में ही पाकिस्तान का बीज छिपा था। गांधी एक ओर कहते रहे, हिन्दू मुस्लिम भाई—हिन्दू मुस्लिम भाई और दूसरी ओर गांधी का हिन्दू होने पर जोर भारत के मुसलमान को काशस करता गया। काश ! गांधी इतनी हिम्मत और कर लेते और कह सकते मैं सिर्फ मनुष्य हूं। न मैं हिन्दू हुं, न मैं मुसलमान हूं, तो हिन्दुस्थान का विभाजन कभी नहीं हो सकता था। गांधी का यह ख्याल कि मैं हिन्दू हूं, जिन्ना को और मुसलमान और मुसलमान बनाता गया। पता है आपको गांधी की मृत्यु पर जिन्ना ने यह कहा कि एक बड़ा हिन्दू लीडर मर गया है। (A Great Hindu Leader.)

जार्ज फर्नाण्डिस : यह तो पूरे जीवन भर उन्होंने यही किया है।

आचार्य रजनीश : और मेरा कहना है इस मामले में

जिन्ना गलत नहीं कह रहे हैं। बल्कि कई बार मुझे ख्याल आता है कि जिन्ना जितने कम मुसलमान थे गांधी उससे बहुत ज्यादा हिन्दू थे। और जिन्ना और गांधी के बीच मेल नहीं हो सकता था, कोई भी गांधी से कम हिन्दू होता तो उसके और जिन्ना के बीच मेल हो सकता था। क्योंकि गांधी इतने ज्यादा हिन्दू हैं—मैं यह कह रहा हूं कि जो हिन्दू मुसलिम एकता की बात कर रहे हैं वह बीमारी को तो स्वीकार कर रहे हैं, और फिर एक करने की बात कर रहे हैं। मैं बीमारी को ही अस्वीकार करना चाहता हूं वहाँ से चीजें टूटनी शुरू होनी चाहिये।

और इस मुल्क के जो भी सवाल हैं, गरीबी के सवाल हैं—गरीबी यहाँ स्वीकृत है। हजारों सालों से और गरीबी की स्वीकृति इतनी ग... सके मन में कि आप गरीब से और कुछ करवाते भी हैं विद्रोह करवाते बगावत करवाते हैं, लड़ाई करवाते हैं तो भी वह लड़ाई गरीबी मिटाने की लड़ाई नहीं हो पाती। वह लड़ाई ज्यादा से ज्यादा नौकरी बढ़वाने की, तनख्वाह बढ़वाने की ······ इस तरह की लड़ाई हो पाती है। बुनियादी रूप से गरीबी को मिटाने की लड़ाई नहीं है ···अगर वह उत्सुक भी होता है लड़ने को तो बिलकुल ही निजी हैसियत से कि थोड़ा बहुत और ज्यादा पा ले। गरीबी मिट जाये, इसके फाउन्डेसन्स हमारे मन में बहुत गहरे बैठे हुये हैं बहुत अजीब ढंग से बैठे हुये हैं।

मेरी दृष्टि यह है कि सारी समस्याओं को उनकी ठीक बुनियाद तक पकड़ने की कोशिश की जानी चाहिये। और उस बुनियाद को हम मुल्क को दिखा सकें और सोचने के लिये मुल्क के विचारशील लोगों को राजी कर सकें तो समाधान खोजने में कठिनाई नहीं है। और यह समाधान नहीं है कि आप एक हिन्दू की मुसलमान से शादी करवा दें ·· जैसे गांधी जी के आश्रम में उन्होंने ऐसी घट नायें की—किसी मुसलमान की हिन्दू से शादी करवा दी, या खुद के लड़के की राजगोपालाचार्य के यहाँ। मेरा मानना है कि जब तक अरेन्जड मेरिज जारी है तब तक मामला हल नहीं हो सकता। जब तक बाप करता है शादी तब तक मामला हल नहीं हो सकता। जब तक अरेन्जड मेरिज को माने चले जाते हैं तब तक जातियाँ टूट नहीं सकतीं और जैसे ही प्रेमविवाह शुरू होंगे, फौरन टूट जायेंगी। जातियाँ तुड़वाने के लिए एक मुसलमान और एक हिन्दू की शादी करवाना बिलकुल बेवकूफी की बात है। इसके लिये यह जरूरी है कि मुल्क में यह हवा पैदा की जाए कि कोई लड़का व लड़की बिना प्रेम के विवाह करने को राजी नहीं होंगे। बिना प्रेम के विवाह करना निहायत जलालियत है। यह बात अगर ख्याल में आ जाय कि जब मेरा प्रेम होगा तभी विवाह करूँगा और प्रेम कभी यह नहीं देखता कि कौन हिन्दू है कौन मुसलमान है कौन हरिजन है कौन अछूत है। यह सब अरेन्जड मेरिज में देखा जाता है। और हिन्दुस्तान में जातियों को बनाये रखने में अरेन्जड मेरिज की डिवायस काम में लायी गयी है—अगर प्रेम विवाह हिन्दुस्तान में जारी रहता तो जातियाँ कभी टिक ही नहीं सकती थीं। आपके पड़ौस में कौन रहता है —आपके लड़के को उसकी लड़की से प्रेम हो सकता है। और लड़के और लड़की जब प्रेम करते हैं वे सिर्फ लड़के और लड़की को प्रेम करते हैं। वे यह नहीं पता लगाते हिन्दू है कि मुसलमान है कि ब्राह्मण है कि भंगी है कि कौन है? हिन्दुस्तान ने एक तरकीब उपयोग की और वह यह कि प्रेम विवाह को जड़ से काट दिया। सारा विवाह अरेन्जड कर दिया। माँ बाप तय करेंगे, ज्योतिषी तय करेंगे और जिनका विवाह होना है उनसे कोई सम्बन्ध नहीं रखा तो फिर हिन्दुस्तान में जातियाँ वहीं खड़ी हो गई।

अब एक आदमी आता है और कहता है फर्नाण्डिस जी आप ऐसा करिये कि अपने लड़के से शूद्र की लड़की से शादी कर दीजिये तो बड़ा फायदा होगा। मगर मैं कहता हूं कि अगर आपने अरेन्जड मेरिज की तो आप उसी बेवकूफी में भागीदार हो रहे हैं जो जातियों को तोड़े हुए हैं। हालांकि आप कर रहे हैं शूद्र की लड़की से शादी लेकिन बाप कर रहा है, आपके करने का सवाल नहीं है। हिन्दुस्तान को अरेन्जड मेरिज की व्यवस्था को आमूल तोड़ देने की हिम्मत और हवा पैदा करना चाहिए। वह टूट जायगी। किसी को कहने की जरूरत नहीं। किसी को कहने की जरूरत नहीं

कि कौन से शादी की है। लड़के–लड़कियाँ प्रेम करेंगे। और शादियाँ होंगी। और तीन पीढ़ी बाद हिन्दुस्तान में खोजे पता नहीं चलेगा कि कोई जाति कहाँ है। लेकिन जो मैं विरोध देखता हूं वह यह है कि जाति टूटना चाहिए वह आदमी यह कहता है कि दूसरी जाति में शादी करो। अभी मैं इन्दौर में एक घर में मेहमान था। वे श्वेताम्बर हैं। वे दिगम्बर में शादी करके भारी क्रॉति समझ रहे हैं। बोले कि हमने अपनी लड़की की शादी दिगम्बर में की और हमने एक बड़ा क्रांतिकारी कदम उठाया है। और लड़की पी एच० डी० है। और अरेन्जड मेरिज हुई है। तो मैंने उनके बाप को कहा कि तुम तो हो ही ना समझ, तुम्हारी लड़की भी मूढ़ है। पी एच० डी० लड़की और बाप तय करता है शादी करने की। और क्रांति हो रही है कि श्वेताम्बर की लड़की अगर दिगम्बर में शादी हो गई तो एक भारी क्रांति हो गई। बाप भी समझ रहा है और लड़की भी समझ रही है कि बड़ी क्रांति हो गई। लड़की से मैंने कहा तुम तो नासमझ हो। बाप तेरी शादी करता है और तू शादी करवाती है। श्वेताम्बर दिगम्बर का झगड़ा नहीं है। श्वेताम्बर दिगम्बर से शादी कर लेंगे। इसमें कोई हर्जा नहीं, लेकिन वे जैन के बाहर नहीं करेंगे। अभी एक महिला आई, उन्होंने कहा मैं आपकी बातें सुनकर बिल्कुल राजी हो गई हूं। मैं कहीं भी शादी कर सकती हूं अपनी लड़की की लेकिन मेरी लड़की का एक मुसलमान से प्रेम है। लेकिन मैं यह नहीं सह सकती। मैं कहीं भी हिन्दू में कर सकती हूं। लेकिन मैंने कहा तेरे करने का सवाल नहीं है। मैं जो कह रहा हूं कि वह ये कि बुम शादी मत करना। लड़कोका जहाँ प्रेम हो जाय वहाँ हो जाय। एक तो बात यह है कि हम अरेन्जड मेरिज की व्यवस्था को स्वीकार करते हैं। उसमें ये इन्तजाम कर लें। उसमें ये इन्तजाम ऊपरी होंगे। और बेमानी होंगे। ये इन्तजाम भीतर से टूट जाने चाहिए। और भीतर से तोड़ने के लिए हमें खोजबीन करनी चाहिए यह कहाँ जाके गड़बड़ी खड़ी हो गई। शूद्रों को बाहर रखा जा सका बस्ती के और उपाय केवल एक था कि विवाह नहीं हो सकता था। और कोई उपाय नहीं था बाहर रखने का। और विवाह इसीलिए नहीं हो सकता था कि विवाह छोटे बच्चों का कर देंगे। और विवाह करने का कोई उपाय नहीं है। चीजें कट जायेंगी। कोई भी समस्या हो, उससे मैं ऐसा सोचता हूं कि पांच हजार वर्षों से इस ओर कोई चिन्तन ही नहीं किया है। और जड़ें भी नहीं खोजी हैं। जब कोई समस्या खड़ी होती है तब हम उसका तात्कालिक हल खोजते हैं। और वो हल उसी चीज का आल्टरनेटिव हल होता है, उसमें कोई फर्क नहीं आता। एक प्रश्नकर्त्ता पूछते हैं "ठीक है; उसका ये सामाजिक स्तर हुआ लेकिन उसका जो आर्थिक पहलू है जैसे गरीबी का मामला है।उसमें जो मानसिक क्रांति का ख्याल है, वह क्या प्रभाव लायेगा ?

आचार्य रजनीश : मेरा कहना है ये जो जितनी आर्थिक क्रांति पिछले २००–३०० वर्षों में दुनिया में हुई है, वह मौलिक रूप से कुछ मानसिक मूल्यों के बदलने से पैदा हुई है। फ्रेन्च रिव्हयूलूशन ने जैसे ही इक्वालिटी का नारा दिया और एक ख्याल पैदा हुआ कि आदमी समान हो सकता है। तब हमने सोचना शुरू किया कि अर्थ तंत्र को कैसे बदला जाये, क्या किया जाये ? गरीब की एक लड़ाई गरीब की यह लड़ाई है कि गरीबी में एक तकलीफ है। वह गरीबी से छूटना चाहता है। ये तो सभी की लड़ाई है। ये बिल्कुल मानवीय स्वभाव है। लेकिन यह क्रांति नहीं है। यह गरीब आदमी यदि गरीबी से छूटना चाहे तो यह बिल्कुल ठीक है। हमेशा से आदमी छूटता रहा है। लेकिन एक एक गरीब आदमी व्यक्तिगत रूप से गरीबी से छूटता रहा है। कोशिश करता रहा है। हमेशा से करता रहा है। जो आदमी आज अमीर है वह दो पीढ़ी पहिले गरीब था—गरीब के बेटे ने कोशिश कर कराके अमीर हो गया है। दुनिया में गरीबी से छूटने की कोशिश पुरानी है सदा से है। दुख से छूटने की कोशिश का ही एक हिस्सा है—लेकिन हर आदमी गरीबी से छूटने की कोशिश खुद करता रहा है।

यह ख्याल पैदा नहीं हो सका कि गरीबी एक सामाजिक तंत्र का परिणाम है—व्यक्तिगत, व्यक्ति के उपक्रम का नहीं। एक बड़े सामाजिक तंत्र का परिणाम है। और तंत्र अगर नहीं बदलता है तो यह हो सकता

है कि 'अ' अगर गरीब है और 'ब' अमीर है तो 'अ' अमीर हो जाय और 'ब' गरीब हो जाय यह हो सकता है। लेकिन कोई अमीर रहेगा कोई गरीब रहेगा और यह तंत्र जारी रहेगा। इसमें मेरा कहना है कि भारत ने इतनी गरीबी देखी है और इतने दिन से समानता की इसने बात कही है कि सब मनुष्य बराबर हैं—समान हैं, फलाँ ढिका…। लेकिन यह बात कारगर नहीं हो पाई।

इसके पीछे भी कारण हैं। जैसा कि मैंने कहा कर्म का सिद्धान्त एक कारण है जो भारत की जान लेता रहा। दूसरा एक कारण है कि भारत ने सामाजिक तंत्र की धारणा ही विकसित नहीं की—सोसाइटी जैसी कोई धारणा नहीं है। इन्डीजुअल की धारणा है हमारे यहाँ और सारा जिम्मा और सारी रिसपांसिबिलटी एक एक व्यक्ति की है। समूह की कोई कामना और कल्पना ही हमारी नहीं है। अभी भी नहीं है। अभी भी मैं अपना कर रहा हूं आप अपना कर रहे हैं। हिन्दुस्तान के सारे शिक्षक ५ हजार साल से भी यही समझा रहे हैं कि अपना मोक्ष खोजना है। अपनी अपनी आत्मा साधनी है। अपना ध्यान रखना है सबके चक्कर में क्या पड़ना है, किसी से क्या लेना देना है। किसी से क्या प्रयोजन है। तुम अपनी फिक्र करो, यह सब तो चलता रहेगा। यह मुल्क के गरीब से गरीब और अमीर से अमीर आदमी के दिल में यह बैठा हुआ है कि आदमी को अपना अपना कर लेना है, न कोई किसी का संगी है, न कोई किसी का साथी है। तब concept of society कि हम एक गहरे समाज के अंग है, हिस्से हैं, और मैं कितना ही कुछ करूँ अगर पूरा तंत्र नहीं बदलता तो बस इतना हो सकता है कि मैं अमीर हो जाऊँ कोई गरीब हो जाये लेकिन गरीबी नहीं मिट सकती, अमीरी नहीं मिट सकती। वह पहेली जारी रहेगी। तो इधर भी मैं सोचता हूं कि भारत को व्यक्ति की धारणा की जगह समाज की धारणा देना जरूरी है। समाजवाद की तो बातें हो रहीं हैं लेकिन समाज की धारणा नहीं है। आदमी के पास तो समाजवाद सुनाई पड़ता है लेकिन समाज की धारणा नहीं है हमारे हृदय में। हम उसकी बात कर लेते हैं, वह नारा बन जाता है, उसके पीछे हम थोड़ी बहुत लड़ाई भी लड़ लेते हैं, लेकिन हिन्दुस्तान में समाजवाद एक रिलीजस संकल नहीं ले पाता कि सारे मुल्क के प्राणों और आत्मा को ग्रसित कर ले कि ऐसा लगने लगे कि इसे कर ही डालना चाहिये। इसे इसी वक्त हो जाना चाहिये। और हिन्दुस्तान में समाजवाद ध्यान रहे, जब तक एक रिलीजन नहीं बन जाता, रिलीजन से मेरा मतलब है कि जब तक वह हिन्दुस्तान की आत्मा को नहीं पकड़ लेता और उसे ऐसा नहीं लगने लगता कि वे केवल किसी मजदूर की बोनस की भत्ते की लड़ाई ही नहीं है, बल्कि यह समस्त मनुष्य की चेतना के विकास का उपक्रम है। जब तक ऐसा भारत के मन को नहीं लगता तब तक उसको उधर नहीं ले जा सकते। इधर कितना बिखराव हुआ है २० सालों में। आप तो जानते हैं, देख ही रहे हैं सारा का सारा कि समाजवाद एक कैसी बिखराव की हालत में खड़ा हो गया है और ऐसा लगता है वह रोज टूटता जा रहा है और खंड खंड होता चला जा रहा है। याने २० साल पहले, अपने देश में समाजवाद की ओर सोचने वाले लोग जिस आशा से भरे हुए थे, वह आज एकदम निराश हो गए। जो जोश और हिम्मत मालूम होती थी १९५० में वह आज बिलकुल खो गई है। उसका कारण है कि आप समाजवाद की बात को तो थोप रहे हैं लेकिन भारत के भीतरी मन में समाज की धारणा नहीं है। वहाँ व्यक्ति की धारणा है। यह व्यक्ति की धारणा अगर नहीं उखाड़ देते हैं आप तो भारत में समाजवाद वह अर्थ नहीं ले सकता जो किसी दूसरे मुल्क में ले सकता है। जहां समाज की एक धारणा है। जैसे चीन है, चीन में व्यक्ति की धारणा बहुत कमजोर रही है, समाज की धारणा बहुत पुरानी है। कनफूसियस को अगर देखें तो वह व्यक्ति को कोई बहुत मूल्य नहीं दे रहा है, समाज तंत्र को बड़ा मूल्य दे रहा है। तो आज उनके प्राणों में जो इतने जोर से बात पकड़ गई है, कि अब वे—अब जो कुछ भी कर रहे हैं गलत हो सही हो कोई माने न माने लेकिन उनके प्राणों में अपील होगई है वह बात उनमें कोई ताल मेल बैठ गया है, लेकिन हमारे साथ कोई तालमेल नहीं बैठा

है। यह ताल मेल बिठालने के लिये जो अर्थतंत्र को बदलने की—गरीबी को मिटाने की बात है वह उतनी महत्वपूर्ण मुझे अभी नहीं मालूम होती। मुझे मूल्यवान यह मालूम पड़ता है कि हिन्दुस्तान के चित्त को समाज की धारणा उपलब्ध हो जाय तो समाजवाद तो बहुत साधारण बात है। समाजवाद तो समाज की धारणा उपलब्ध हो जाय तो आ जायेगा। एक सेकिन्ड में आ सकता है। और धारणा उपलब्ध न हो तो वह नहीं आ सकता। जैसे अभी मेरा देखना है हम सब ऊपर से कर रहे हैं। समाजवाद की धारणा हमने पश्चिम से लाकर थोप दी है—हिन्दुस्तान में वह है नहीं। ऐसे ही लोकतंत्र भी बन गया है और कोई लोकतंत्र का सवाल नहीं है। लोकतंत्र की जो भावना होनी चाहिये वह तो है नहीं हिन्दुस्तान के पास, राष्ट्र की कोई धारणा नहीं है हिन्दुस्तान के पास, पश्चिम से लाकर इसे नेशन बना दिया है कि भारत एक राष्ट्र है। राष्ट्र वगैरह की धारणा भीतर से नहीं है।

जार्ज फर्नाण्डिस :—मैं समझा आपकी बात को। तो आप जो इतना सोचते हैं तो इसको कार्य रूप देने के लिये आप क्या कर रहे हैं ? आप के पास कोई कार्यक्रम या कि कोई योजना है।

आचार्य रजनीश :—मैं अभी तो सीधे रूप से कुछ भी नहीं कर रहा हूं। एक आदमी कुछ कर भी नहीं सकता है। अभी तो जगह जगह मित्रों से बात कर रहा हूं। अपनी बात जगह-जगह स्पष्ट कर रहा हूं। फिर जिन मित्रों को लगेगा कुछ करने जैसा वे आगे आयेंगे और कार्य करेंगे। तो अभी तो मेरी सारी चेष्टा विविध मसलों पर जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी बात स्पष्ट करने की है और एक बार बात ठीक से स्पष्ट हो जाती है तो मुझे लगता है कि आगे का काम ज्यादा कठिन नहीं है। ऐसा भी जरूरी नहीं है कि सारे मुल्क के लोगों को इसके लिये राजी किया जाये या कि सारे मुल्क के लोगों को ये बातें समझाये जाने की जरूरत है। देश के कुछ विचार शील लोग, एक विचार शील वर्ग को ही, इसके लिये तैयार करने की आवश्यकता है—शेष तो अपने आप पीछे हो लेंगे।

तो मुझे लगता है कि कुछ विचार शील मित्र इकट्ठे होंगे। आप जैसे कुछ लोग आगे आयेंगे और इस कार्य को आगे बढ़ायेंगे। मैं जीवन को विविध पहलू का मानता हूं—जीवन अनेक पहलुओं का जोड़ है। और कोई भी पहलू किसी से कम महत्व का मैं नहीं मानता। मैं जीवन के हर पहलू पर अपने विचार दे रहा हूं। मैं चाहूंगा कि जिन मित्रों को जिस दिशा में रुचि हो उस दिशा में काम करेंगे मेरी स्वयं की सक्रिय रूप से किसी भी क्षेत्र में भाग लेने की अभी तो कोई मनसा नहीं है। क्योंकि मैं किसी एक काम में उलझ कर शेष मसलों पर मैं जो विचार दे सकता हूं उनसे वंचित नहीं होना चाहता। तो मैं तो सभी दिशाओं में अपने विचार दूँगा और मित्र अलग-अलग दिशाओं में काम को आगे बढ़ावेंगे।

धीरे-धीरे ऐसे मित्र इकट्ठे हो रहें हैं जिनसे लगता है कि काम आगे बढ़ेगा। इसके साथ ही, एक दूसरे की कुशलता का एवं आचार्य श्री के नई दिल्ली में होने वाले आगामी कार्यक्रमों की जानकारी, तथा पुनः दिल्ली में आचार्य जी से भेंट करने की इच्छा व्यक्त करते हुये जा० फ० जी ने विदा ली।

मैं जो सीखा था, उसे भूला, तब उसे पा सका जो कि अकेला ही सीखने योग्य है लेकिन सीखा नहीं जा सकता। क्या सत्य को पाने के लिये, सत्य के संबंध में जो सीखा है, उसे भूलने की तुम्हारी तैयारी है ? यदि हाँ, तो आओ सत्य के द्वार हमारे लिये खुले हुये हैं।

सत्य और अन्तरानुभूति

संकलन—आलोक कुमार पांडे

पूछा है कि धर्म शास्त्र अत्यंत पाखण्ड है, वेद उपनिषद में जो बातें हैं, उन्हें सत्य मानना चाहिए या नहीं ?

शास्त्रों में जो है उसे आप कभी नहीं पढ़ते। शास्त्र में जो है उसे नहीं, आप में जो है उसे ही आप पढ़ते हैं। इसे थोड़ा समझ लेना जरूरी होगा। यदि आप गीता को पढ़ते हैं या उपनिषद को पढ़ते हैं या बाइबिल को या और किसी शास्त्र को, तो क्या आप सोचते हैं कि जितने लोग पढ़ते हैं वे सब एक ही बात समझते हैं। निश्चित ही जितने लोग पढ़ते हैं उतनी बातें समझी जाती हैं। शास्त्र से जो आप समझते हैं वह शास्त्र से नहीं, आपकी ही समझ से वे बातें आती हैं। स्वाभाविक है जितनी मेरी समझ है, जो मेरा संस्कार है, जो मेरी शिक्षा है उसके माध्यम से ही मैं समझ सकूंगा। जब आप गीता को समझ लेते हैं तो यह मत समझना कि कृष्ण के वचन आपने समझे हैं। आपने अपने ही वचन समझे हैं। इसीलिए शास्त्रों में चाहे सत्य भरा हो लेकिन शास्त्र के पढ़ने से सत्य उपलब्ध नहीं होता। इसे समझ लेना ठीक से। शास्त्र में भरे सत्य को समझ लेने से सत्य उपलब्ध नहीं होता। हाँ, सत्य उपलब्ध हो जाये तो शास्त्र समझ में आ जाता है। क्योंकि कृष्ण ने जिस चेतना की स्थिति में वचन कहे हैं गीता में, जब तक वैसी चेतना की स्थिति उपलब्ध न हो, कृष्ण के वचन नहीं समझे जा सकते। जो भी आप समझेंगे वही आपका होगा। यही वजह है कि शास्त्रों पर इतना विवाद है। गीता पर हजार टीकाएँ हैं। लेकिन कृष्ण का एक ही अर्थ रहा होगा। पर जिनने हजार-हजार टीकाएँ की हैं वे समझते हैं हजार हजार अर्थ हैं। निश्चित ही ये टीकाएँ कृष्ण की गीता पर नहीं, इनके लिखने वालों की बुद्धि की सूचनाएँ हैं। उनके अपने विचार का प्रतिफल है अन्यथा हजार अर्थ नहीं हो सकते हैं गीता के। सच तो यह है कि जितने लोग पढ़ेंगे गीता को, उतने ही अर्थ हो जायेंगे। जो अर्थ आप समझ रहे है वह अर्थ गीता का है ? इस भूल में मत पड़ना, वह आपका अपना अर्थ है। जब आप शास्त्र को पढ़ते हैं, आपको सत्य उपलब्ध नहीं होता। आप जो जानते हैं उसका ही कोई अर्थ उपलब्ध होता है और वह सत्य नहीं है। कोई सत्य को जान ले तो शास्त्र को समझ सकता है शास्त्र को समझकर सत्य को नहीं जान सकता है।

यही वजह है कि दुनिया के सारे धर्म ग्रंथ एक ही सत्य को कहते हैं लेकिन इनके मानने वाले आपस में लड़ते हैं। इनके मानने वालों में विरोध है। दुनिया में सत्य के नाम पर इतने सम्प्रदाय हैं। सत्य एक है और सम्प्रदाय अनेक हैं। क्या इससे यह समझ में नहीं आता है कि सम्प्रदाय हम बनाते हैं। सत्य हम नहीं बनाते और जैसे-जैसे दुनिया में विचार बढ़ता जायगा वैसे-वैसे उतने सम्प्रदाय हो जायेंगे जितने लोग हैं। क्योंकि विचार हर एक व्यक्ति को अपना मत पैदा करवा देता है।

"सत्य को जानने का उपाय अध्ययन नहीं है, ध्यान है।"

मैंने जो कहा है कि शास्त्रों के पढ़ने से सत्य नहीं

मिलेगा, उसका अर्थ भी समझ लेना जरूरी है। आप उतना ही समझ सकते हैं जितनी आपकी चेतना की स्थिति है, उससे ज्यादा नहीं। इसीलिए शास्त्र पढ़कर आप अपना ही अर्थ जानते हैं, शास्त्र का अर्थ नहीं जानते। शास्त्र के अध्ययन से सत्य नहीं मिलेगा। इसीलिए मैंने कहा कि सत्य को जानने का उपाय अध्ययन नहीं है, ध्यान है। कोई बात पढ़कर मस्तिष्क में संग्रहित होकर जो स्मृति बन जाती है वह सत्य नहीं है। वरन सारे विचारों को छोड़कर जब कोई व्यक्ति निर्विचार हो जाता है, उसके चित्त में कोई विचार नहीं होते। उस निर्विचार अवस्था में उसे जो दिखाई पड़ता है वही सत्य है और वह सत्य एक बार अनुभव में आ जाये तो शास्त्र का कोई प्रयोजन भी नहीं रह जाता। हम उसे स्वयं ही जान लेते हैं जो कि शास्त्र कहता है।

मैं समझता हूं कि मेरी बात आपको स्पष्ट हो गई होगी। मैं यहाँ बोल रहा हूं। मैं बोलने वाला एक हूं। मैं जो कह रहा हूं उसमें भी मेरा प्रयोजन एक ही अर्थ से है। लेकिन क्या आप सोच रहे हैं कि आप जो सुनने वाले हैं वही सुन रहे हैं जो मैं बोल रहा हूं। अगर आप वही सुन रहे हों और आप सबसे पूछा जाय कि मैंने जो कहा, है, क्या कहा है ? तो क्या आप सोचते हैं कि आप सबका मत एक होगा ? वह मत अनेक हो जायगा। निश्चित ही इसका अर्थ हुआ कि मैंने जो कहा वही आपने नहीं सुना। मैंने जो कहा, उससे बहुत भिन्न आपने सुना है। आप भिन्न सुनेंगे ही, क्योंकि आपके विचार और आपके संस्कार इतने भिन्न हैं कि मेरी बात आपके भीतर जाकर बिल्कुल भिन्न अर्थ ले लेगी। और वह जो भिन्न अर्थ होगा वह आप मेरे ऊपर थोपेंगे कि मैंने कहा है। वैसे ही हम कृष्ण के ऊपर अपना अर्थ थोपते हैं और कहना चाहते हैं कि उन्होंने यह अर्थ कहा है। इस भ्रम में कभी न पड़ें। आप जो कहेंगे वह आप ही कह रहे हैं, किसी दूसरे के ऊपर न थोपें। और अगर सत्य जानने की स्थिति में हैं तो शास्त्र पढ़ने की कोई जरूरत नहीं, और अगर सत्य जानने की स्थिति में नहीं हैं तो शास्त्र पढ़ने से कुछ भी नहीं होगा। इसीलिये मैंने कहा---एक आदमी जीवन भर पढ़ता रहता है, कितने ही शास्त्र पढ़े उससे कुछ नहीं होगा। हाँ उसके पास बहुत विचार इकट्ठे हो जायेंगे। अगर वह उपदेश देना चाहे तो दे सकेगा और उपदेश देने का जो अहंकार है, वह ले सकेगा।

दुनिया में उपदेश देने से बड़ी अहंता और कुछ नहीं है। जो रस और जो आनंद उपदेश देने में है वह किसी और बात में नहीं है। शास्त्र पढ़कर आप उपदेश दे सकेंगे, शास्त्र पढ़कर चाहें तो दूसरे शास्त्र पैदा कर सकेंगे, यह हो सकता है। लेकिन सत्य से आपका कोई साक्षात्कार नहीं होगा। सत्य के साक्षात्कार के लिए विचार का अपरिग्रह, विचार का त्याग, विचार का छोड़ देना जरूरी है। सत्य तो हमारे भीतर है। सत्य तो चारों तरफ मौजूद है, लेकिन हमारे पास उसे देखने की आँख नहीं है।

बुद्ध के जीवन में उल्लेख है--एक गांव में वे गये। कुछ लोग एक अन्धे आदमी को लेकर उनके पास आये और उन लोगों ने कहा : यह हमारा मित्र है। इसके पास आंखें नहीं हैं। हम इसे समझाते हैं कि प्रकाश है, सूरज है लेकिन यह मानता नहीं है। यह इन्कार करता है, यह अस्वीकार करता है, बल्कि समझाता है कि तुम्हीं गलत हो। प्रकाश नहीं है, इसके ऐसे-ऐसे तर्क और प्रमाण देता है कि यह जीत जाता है। यह सुनकर कि बुद्ध का इस गाँव में आगमन हुआ है, हम इसे आपके पास ले आये हैं। इसे समझायें कि प्रकाश है।

बुद्ध ने कहा कि हम इसे कुछ नहीं समझायेंगे और न कुछ तुम्हें समझायेंगे। वे सब यह सुनकर बहुत हैरान हुए। उन मित्रों ने कहा कि हम इसे कहते हैं कि प्रकाश है, तो यह कहता है कि मैं उसे छूकर देखना चाहता हूं। क्योंकि जिस चीज की भी सत्ता है वह छूकर देखी जा सकती है। हम कहते हैं कि प्रकाश है तो यह कहता है कि उसे बजाओ, मैं उसकी आवाज सुनना चाहता हूं। हम असमर्थ हो जाते हैं।

बुद्ध ने कहा भूल तुम्हारी है। जिसके पास आँख

नहीं है उसे प्रकाश समझाने की बात पागलपन है। प्रकाश समझाया नहीं जाता, प्रकाश देखा जाता है। कोई प्रकाश को समझा नहीं सकता। प्रकाश को देखना होता है। प्रकाश का विचार नहीं होता है। प्रकाश की धारणा नहीं बनाना होती, प्रकाश की अनुभूति होती है। तुम इसे समझाते हो, बिना इस बात को जानते हुए कि इसके पास आँखें नहीं हैं, तुम्हीं पागल हो। यह तो ठीक ही कहता है। उचित हो कि इसे किसी विचारक के पास नहीं, किसी वैद्य के पास ले जाओ। इसे उपदेश की नहीं, उपचार की जरूरत है। इसे समझाओ मत, इसकी आँखों का इलाज करो। अगर इसके पास आँखें होंगी तो तुम्हारे बिना समझाये भी यह जानेगा कि प्रकाश है। अगर इसके पास आँखें नहीं हैं तो तुम्हारे लाख समझाने से भी यह नहीं जान सकता। वे उसे वैद्य जी के पास ले गये। उसकी चिकित्सा हुई और थोड़े ही दिनों में उसकी आँखों की जाली कट गयी। वह देखने में समर्थ हो गया। उसने अपने मित्रों से कहा—मुझे क्षमा कर दें। प्रकाश तो था, आँखें नहीं थी। तुम कहते थे, वह व्यर्थ हो जाता था। क्योंकि जिसका मुझे अनुभव नहीं था उस सम्बन्ध में कहे गये कोई भी शब्द मुझे सार्थक नहीं हो सकते थे। तुम्हारी बातें मुझे व्यर्थ लगती थीं। मुझे ऐसा लगता था कि प्रकाश की बातें तुम मुझसे इसीलिए करते हो ताकि मुझे अन्धा सिद्ध कर सको। तुम मुझे अन्धा सिद्ध करने के लिए प्रकाश की बातें करते हो यह मेरी समझ में आता था। अब मैं जानता हूं कि प्रकाश है, क्योंकि आँख है :

"सत्य का विचार नहीं होता है, दर्शन होता है। सत्य के लिए एक तरह की आंख खोलनी होती है भीतर, तब उसकी प्रतीति होती है।"

सत्य का भी विचार नहीं होता है, दर्शन होता है। सत्य का भी अध्ययन नहीं होता है, अनुभूति होती है। सत्य के लिए भी एक तरह की आँख खोलनी होती है भीतर, तब उसकी प्रतीति होती है, शास्त्र पढ़ने से नहीं। एक अन्धे आदमी को कितना भी प्रकाश के सम्बन्ध में पढ़ाओ और समझाओ, तो क्या होगा ? हो सकता है वह भी उन बातों को दोहराने लगे। लेकिन उससे आँख थोड़े ही खुलेगी। उससे अनुभव थोड़े ही होगा। उससे साक्षात थोड़े ही होगा। सत्य के लिए आँख चाहिए, विचार नहीं अध्ययन नहीं। इसीलिए कोई शास्त्र सत्य देने में समर्थ नहीं है। जो शास्त्र नहीं दे सकता वही साधना से उपलब्ध होता है। इससे यह नहीं समझ लेना कि मैंने कहा है कि शास्त्र गलत हैं। इससे यह मत समझ लेना कि शास्त्रों में कोई सत्य नहीं है। मैं जो कह रहा हूं वह यह है कि शास्त्र से सत्य उपलब्ध नहीं हो सकता है। मैं जो कह रहा हूं वह यह कि आप उनको पढ़कर सत्य को नहीं पा सकते हैं। प्रकाश के विषय में ग्रंथ हैं लेकिन अन्धे के लिए व्यर्थ हैं। मैं यह नहीं कह रहा था कि उन ग्रंथों में प्रकाश के सम्बन्ध में जो लिखा है वह सब गलत है, लेकिन उससे कोई आँख नहीं खुलती। आँख खुलने का और उपचार है। इस बात को ध्यान में रखेंगे तो मेरी बात समझ में आ सकती है। आपको कुछ भी पढ़ने से सत्य नहीं मिलेगा। अगर पढ़ने से सत्य मिलता हो तो सत्य के विद्यालय खोले जा सकते थे। कोई कठिनाई न थी। वहाँ सत्य मिल जाता। लोग पढ़ते और सोच लेते। विज्ञान अध्ययन से मिल सकता है, धर्म अध्ययन से नहीं मिलता है। इसीलिए विज्ञान के शास्त्र सहायक हैं और धर्म के शास्त्र बाधक हो जाते हैं। विज्ञान बिना अध्ययन के नहीं मिल सकता है, जो भी जड़ के सम्बन्ध में है वह अध्ययन से मिल जायगा। उसके शास्त्र हो सकते हैं। लेकिन जो चैतन्य के सम्बन्ध में है, वह अध्ययन से नहीं मिलेगा, उसकी सिर्फ अनुभूति होती है।

साथ ही इसके और पूछा है, इसी के साथ-साथ कि मनुष्य जन्म से ही ज्ञानी नहीं होता है उसे तो अध्ययन करना पड़ता है। फिर वह कौन सा अध्ययन कर जीवन सफल बना सकता है ?

अभी मैंने जो कहा, उसे अगर आप समझे होंगे तो मैं कहना चाहूंगा कि शास्त्र के अध्ययन से नहीं, जीवन के अध्ययन से जीवन सफल बनता है। जीवन से बड़ा भी कुछ और अध्ययन करने को है ? क्या सारे

शास्त्र जीवन के अध्ययन से ही नहीं निकले हैं। जिस जीवन के अध्ययन से सबका जन्म होता है, क्या उचित नहीं है कि उसी जीवन को हम अध्ययन करें और सेकेंड-हैंड, दूसरे के हाथ से आई हुई सूचनाओं को ग्रहण न करें? क्या मुझे प्रेम के सम्बन्ध में कोई कुछ कह देगा तो मैं प्रेम को जान लूंगा? क्या मुझे प्रेम को स्वयं ही नहीं जानना होगा जिससे मैं जान सकूं। क्या मैं दूसरों के प्रेम अनुभवों से कोई अनुभूति पा सकता हूं? और जब जीवन उपलब्ध है तो क्या उचित नहीं होगा कि मैं प्रेम को करके ही जानूं?

जब जीवन मुझे मिला है तो मैं जीवन का ही अध्ययन करूँगा। जीवन का तो अध्ययन हम नहीं करते, हम शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। जो कि बिलकुल मृत है, जो कि बिल्कुल डेड है। जीवन सामने है और हम शास्त्र का अध्ययन करते हैं। रवीन्द्रनाथ के जीवन में एक उल्लेख है। वे सौन्दर्य शास्त्र का अध्ययन करते थे, सौन्दर्य क्या है, इसकी खोज में थे, बहुत खोजा, बहुत शास्त्र पढ़े, सौन्दर्य के सम्बन्ध में कोई धारणा नहीं हो पाती थी। एक रात नाव पर बजरे में थे। चाँदनी रात थी। नाव पर अपनी छोटी सी झोपड़ी में बैठकर अध्ययन करते थे। सौन्दर्यशास्त्र को पढ़ते थे। फिर रात को कोई २ बजे थक गये, किताब को बन्द की, दिया बुझाया और अपनी कुर्सी पर लेट रहे। लेटते ही खिड़की के बाहर दृष्टि गई, खिचे हुए खिड़की पर आकर खड़े हो गये और कहने लगे मैं कैसा पागल हूं, सौन्दर्य बाहर मौजूद है और मैं शास्त्र में उसका अध्ययन कर रहा हूं। सौन्दर्य बाहर था और मैं उसका शास्त्र में अध्ययन कर रहा था। सौन्दर्य निरंतर मौजूद है लेकिन कुछ पागल हैं जो शास्त्र में उसका अध्ययन करने जाते हैं। प्रेम निरन्तर मौजूद है। लेकिन कुछ पागल हैं जो प्रेम का भी अध्ययन, शास्त्र में करने जाते हैं। परमात्मा निरंतर मौजूद है। लेकिन कुछ पागल हैं जो कि उसका अध्ययन करने शास्त्र में जाते हैं। जो चारों तरफ है वह क्या है? क्या प्रतिक्षण वहां परमात्मा और प्रतिक्षण वहाँ सत्य और सत्ता नहीं है? वहां है लेकिन हम प्रतिक्षण उसे देखने को तैयार नहीं हैं। न देखने की इच्छा है, न देखने की भीतर भूमिका है। मैं आपसे कहूं कि आप जीवन को देख ही नहीं पाते और जीने से गुजर जाते हैं। आप कहेंगे – कैसी बात मैं कर रहा हूं। दिन रात जीते हैं, सुबह से शाम जीते हैं, शाम से सुबह जीते हैं, चौबीस घन्टे जीते हैं और कह रहा हूं कि आप जीवन को बिना जाने निकल जाते हैं। निश्चित मैं आपसे कह रहा हूं कि आप जीवन को बिना जाने निकल जाते हैं। और इसीलिये तो सारे सवाल उठते हैं कि ईश्वर है या नहीं? अगर जीवन से परिचित हो जाते तो ईश्वर मिल जाता। इसीलिये सवाल उठता है कि आत्मा है या नहीं?

सौन्दर्य निरन्तर मौजूद है, लेकिन कुछ पागल हैं जो शास्त्र में उसका अध्ययन करने जाते हैं। प्रेम निरन्तर मौजूद है लेकिन कुछ पागल हैं जो प्रेम का भी अध्ययन, शास्त्र में करने जाते हैं।"

सत्य आकाश की भाँति है—अनादि और अनंत और असीम। क्या आकाश में प्रवेश का कोई द्वार है? तब सत्य में भी कैसे हो सकता है? पर यदि हमारी आँखें ही बंद हों तो आकाश नहीं है और ऐसा ही सत्य के संबंध में भी है। आँखों का खुला होना ही द्वार है और आँखों का बंद होना ही द्वार का बंद होना है।

आचार्य श्री के आगामी देश-व्यापी कार्यक्रम

दिनाँक	स्थान	कार्यक्रम	संयोजक
७ सितम्बर, ६९	शहीद स्मारक, जबलपुर	प्रवचन	श्री भीकमचन्द, जीवन जागृति केन्द्र, ३८९, हनुमानताल, जबलपुर। फोन : २९५७.
११, १२ एवं १३ सित. ६९	पूना	सत्संग	श्री माणिक बाबू बाफना, जीवन जागृति केन्द्र, २४७।१४ बी, यरोडा, पूना-६। फोन : २४११४.
१४ एवं १५ सित. ६९	बम्बई		श्री ईश्वर बाबू, जीवन जागृति केन्द्र, एम्पायर बिल्डिंग, रूम नं० ५३, डा० डी० एन० रोड, बम्बई-१। फोन : २६४५३०.
१६ सित. ६९	दिल्ली		श्री लाला सुन्दरलाल जी, ४१, यू० ए० बंगलो रोड. जवाहर नगर, दिल्ली-६। फोन : २२७६५५.
१७ से ३० सित. ६९	श्रीनगर, काश्मीर	प्रवास यात्रा	श्री लाला सुन्दरलाल जी, जवाहर नगर, दिल्ली-६।
१ से ५ अक्टू. ६९	मनाली	प्रवास यात्रा	श्री लाला सुन्दरलाल जी, जवाहर नगर, दिल्ली-६।
८ अक्टू. ६९ (रात्रि ८ बजे)	रोटरी क्लब, जबलपुर	प्रवचन	रोटरी क्लब, जबलपुर।
१४, १५, १६ एवं १७ अक्टू.	जालन्धर	सत्संग	श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, जीवन जागृति केन्द्र, एन० के० १७५, चरणजीतपुरा, जालन्धर।
१३ एवं १८ अक्टू. ६९	दिल्ली		श्री लाला सुन्दरलाल जी, जवाहर नगर, दिल्ली-६।
२५ अक्टू. ६९ (रात्रि ८ बजे)	शहीद स्मारक, जबलपुर	प्रवचन	श्री भीकमचन्द, जीवन जागृति केन्द्र, ३८९, हनुमानताल, जबलपुर। फोन : २९५७.
२८, २९, ३० एवं ३१ अक्टू:	द्वारका (गुजरात)	साधना शिविर	श्री पुष्कर भाई गोकाणी, जीवन जागृति केन्द्र, जवाहर रोड, द्वारका।

उत्तम तम्बाकू और कुशल कारीगरों से बनी

शेर और पहलवान छाप बिड़ी

भारत में अग्रणी है

—०—

मोहनलाल हरगोविंददास

(जबलपुर म० प्र०)

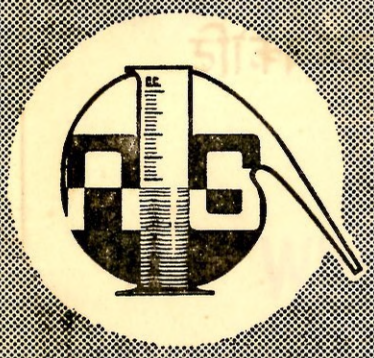

★ NICKEL SULPHATE
★ NICKEL CARBONATE
★ NICKEL FORMATE
★ SODIUM FORMATE
★ TRI CALCIUM PHOSPHATE B.P.C.
★ PHOSPHORIC ACID
Technical 85 Water White

Manufacturers:

ANANG CHEMICALS

FACTORY:— Kolbad Road
Panch Pakhadi
J. K. Gram
THANA
Maharashtra
Phone—591576

OFFICE:— 20,"L.K.Market"
Zaveri Bazar
Bombay-2 B. R.
Phone—29528

FOR GOOD MUSIC TUNE IN

'SWAR SANGAM'

EVERY SUNDAY

from : 9-00 to 9-30 p. m.

Over Radio Ceylon

ON
25 AND 49 METER BANDS

ALSO

'SANGAM'

daily from 8-10 to 8-40 p.m.

ON 19 METER BAND

OVER

RADIO VOICE OF THE GOSPEL,
ADDIS ABABA ETHIOPIA

PRODUCED BY *CARAVS* 15, Nehru Marg, JABALPUR (M. P.)

आधुनिक रहन-सहन के लिये
आरामदायक एवं उच्चकोटि
के सोफा–कम–बेड तथा
बुडन फर्नीचर के
निर्माता:

अशोक फर्नीचर मार्ट

गंजीपुरा मेन रोड, जबलपुर, म. प्र.

WHERE COURTESY IS YOUR HOST

Kwality Restaurant

SADAR JABALPUR

Sole Distributors

FOR

Kwality Ice Cream

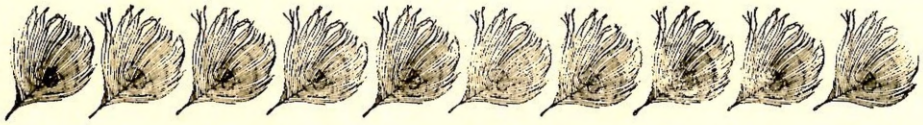

When you wear

Sikova

EMBROIDERED FABRICS

the best compliments come to you!

Stronachs Z. 34

KWALITY

ICE CREAM

90-A, Industrial Area, Ludhiana

ANNOUNCE THE APPOINTMENT OF THE FOLLOWING PARTIES
AS THEIR WHOLESALE AGENTS FOR ICE CREAM

1. M/s Kishore & Co., 4 A, Lawrence Road. Amritsar.
2. M/s Emkay Traders, Chandra Buildings, Jullundhur.
3. M/s Kwality Ice Cream Centre, Canal Road, Jammu.
4. M/s Upkar Agencies, Dharampura, Patiala.
5. M/s Subhash Coffee Bar, Moga
6. M/s Sood & Co., Sadar Bazar, Ambala.

THE PARTIES INTERESTED FOR SUB-AGENCIES
IN THE ABOVE NOTED STATIONS MAY CONTACT THESE FIRMS

सत्वाधिकारी मानसेवी संपादक श्री अजितकुमार एम० काम०, एल एल० बी० द्वारा सम्पादित एवं युक्तांद प्रकाशन समिति, कमला नेहरू नगर, जबलपुर के लिए मुद्रित एवं प्रकाशित । मुद्रण स्थल—जबलपुर को-आपरेटिव प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर.